

ISSN 2279 - 0489
AN INTERNATIONAL MULTIDISCIPLINARY
HALF YEARLY RESEARCH JOURNAL

GENIUS

Volume - VI

Issue - II

February - July - 2018

ENGLISH - V / MARATHI

**Peer Reviewed Referred
and UGC Listed Journal**

Journal No. 47100



ज्ञान-विज्ञान विमुक्तये

**IMPACT FACTOR / INDEXING
2017 - 4.954**

www.sjifactor.com

❖ EDITOR ❖

Assit. Prof. Vinay Shankarrao Hatole
M.Sc (Math's), M.B.A. (Mkt), M.B.A (H.R),
M.Drama (Acting), M.Drama (Prod & Dir), M.Ed.

❖ PUBLISHED BY ❖



Ajanta Prakashan
Aurangabad. (M.S.)


Dr. (Miss) Della Antao
Offg. Principal
Nirmaja Institute of Education
Atinhe, Panaji, Goa

Impact of Digital Literacy on the Academic Libraries

Dr. Maya Carvalhoe Rodrigues
Librarian, Nirmala Institute of Education, Altinho Panaji Goa.

Abstract

Digital literacy is a more recent concept than information literacy and can relate to multiple categories of library users in multiple types of libraries. Digital Literacy (DL) is the process of teaching and learning about technology and the use of technology. It is the ability to use information and communication technologies to find, evaluate, create, and communicate information, requiring both cognitive and technical skills. The ability to understand and use information in multiple formats from a wide range of sources when it is presented via computers. Libraries all over the world have to keep themselves abreast with the evolving technological advancement, globalization, and digitization of information. These have led to library automation, digital and virtual libraries.

Introduction

Digital Literacy has led to increases in information that can be planned and quickly be accessed to facilitate the collaboration and sharing of computer knowledge. With other forms of digital literacy, we are also seeing an increase of digital modes of communication.

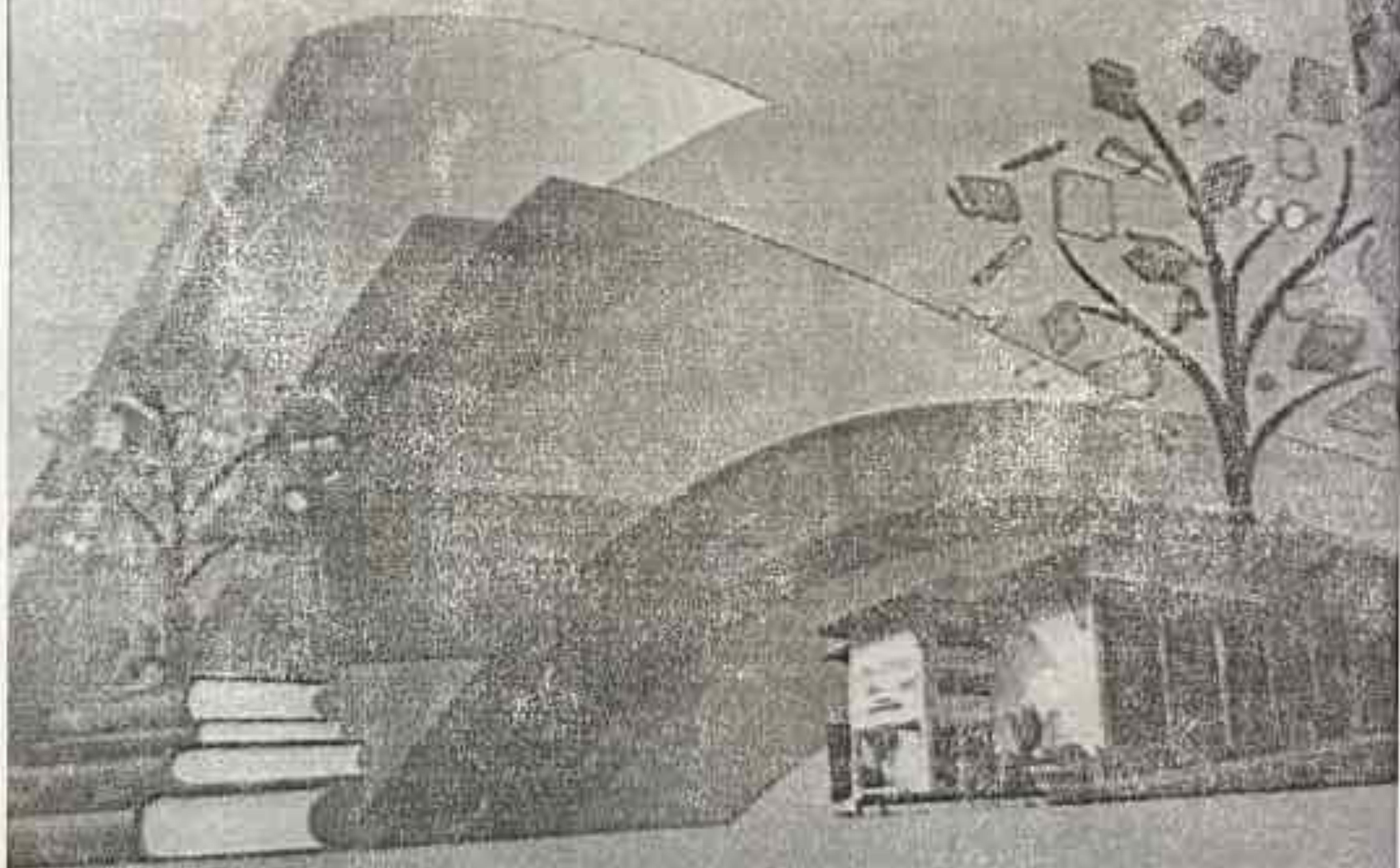
The library and information landscape has transformed with the onset of the digital era and today traditional libraries have changed their roles to serve as Knowledge Centres with priority on value added electronic information services. Digital Literacy awareness, attitude and ability of individuals to appropriately use digital tools and facilities to identify access, manage, integrate, analyze the digital resources and create media. Literacy includes the ability to read and interpret media, to reproduce data and images through digital manipulation, and to evaluate and apply new knowledge gained from digital environments. Digital Literacy (DL) is the process of teaching and learning about technology and the use of technology. It is the ability to use information and communication technologies to find, evaluate, create, and communicate information, requiring both cognitive and technical skills. The ability to use digital technology.



GOA-LIS-2018

(Goa - Library & Information Science Convention)

RESHAPING LIBRARIES WITH EMERGING GLOBAL TECHNOLOGY AND TRENDS



-: Edited By :-

Dr. Carlos M. Fernandes

Smt. Anjali M. Bhide

Shri. Sandesh B. Dessai

Dr. Maya Carvalho e Rodrigues

Antas

GOA-LIS 2018

(Goa - Library and Information Science Convention)

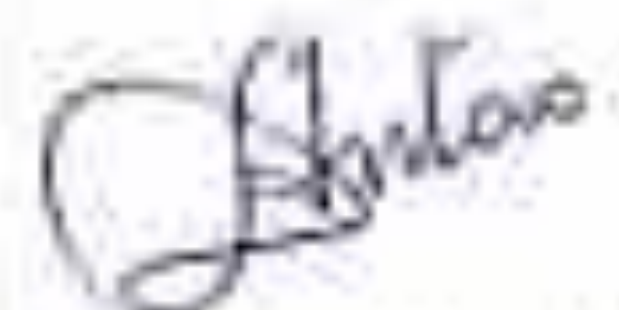
RESHAPING LIBRARIES WITH EMERGING GLOBAL TECHNOLOGY AND TRENDS

Proceedings of the National convention held at
Krishnadas Shama Goa State Central Library,
Sanskriti Bhavan, Patto, Panaji-Goa.
On 9th August 2018

-: Edited By :-

Dr. Carlos M. Fernandes
Smt. Anjali M. Bhide
Shri. Sandesh B. Dessai
Dr. Maya Carvalho e Rodrigues

Krishnadas Shama Goa State Central Library
(KSGSCL)
Panaji - Goa
2018



Dr. (Miss) Dollz Antao
Offg. Principal
Normal Institute of Education
Altinho, Panaji, Goa

Content

Editorial Board	iv
Advisory Board	iv
Organising Committee	v
Foreword	vi
Preface	vii
Contributors	viii
1 Implementation of Quick Response (QR) Code in Library and its Benefits in Mobile Era Dr. Carlos M. Fernandes Vinda S. Gadekar	1
2 The Indispensable Librarian - Making a Difference Dr. Maya Carvalho e Rodrigues	13
3 Role of Goa Public Libraries in Sustaining Educational Needs Sandesh B. Dessai	27
4 Plagiarism, The Black Sheep in Academics: A Case Study Novelty Volvaikar e Morjekar	40
5 Higher Secondary School Libraries in Goa in the ICT Era: A Case Study Anju Pai Bhale	58
6 Library Information Services at St. Xavier's College, Mapusa - Goa. Dr. Keshav R. Dhuri	73



The Indispensable Librarian - Making a Difference

Dr. Maya Carvalho e Rodrigues

Abstract

Leadership is often-misunderstood especially in the context of libraries. The societal, organizational, and competitive changes affecting academic libraries point to the need for effective leadership and the identification of leadership capabilities and expertise for academic librarians. Within the context of increasing success; limited resources; demands for greater accountability to authorities; the requirements of a divergent, technologically media savvy, and demanding user population; and organizational challenges such as changing structures and greater use of team-based decision-making, the effective organizational leadership of academic libraries is of growing importance. The success of libraries as organizations is resolved by the actions of the library staff who work in those libraries; the success of those individuals in carrying out the missions of those libraries is in large measure a reflection of the type and quality of leadership. Successful library leaders



Delia Antao
Principal

प्रसंगवश

6. अर्चना वर्मा : एक मुक्त स्त्री का रेखाचित्र स्मृति शेष

8. बलवन्त कौर : मेरा मुझमें कुछ नहीं जो कुछ है सो तेरा...

11. रजनी दिसोदिया : ओ दूर के मुसाफिर

14. निशा नाग : शब्द से शब्दातीत

17. आशुतोष भारद्वाज : आखिरी खत

65. जयशंकर : अर्चना वर्मा : पलायन से दूर मुठभेड़ के करीब

67. विभास वर्मा : एक ईमानदार जित कहानियाँ

18. अर्चना वर्मा : स्थगित

24. अर्चना वर्मा : शिकायत

32. अर्चना वर्मा : जोकर

56. अर्चना वर्मा : पाँच छोटी कहानियाँ आलेख

59. अर्चना वर्मा : स्त्री : स्वाधीनता का प्रश्न

कविताएँ

50. अर्चना जी की कविताएँ

टकटकी

70. रश्मि रावत : मुक्ति की राह में अकेली पड़ती स्त्री

आभासी संसार से

75. डेजी सिंह की कविताएँ

रंगमंच

78. अनघा देशपांडे : निर्देशक बनना अच्छा व्यक्ति बनने की शुरुआत है

परिदृश्य

85. श्रीधरम : साहित्य-समाचार

बारहमासी

83. ज्ञान चतुर्वेदी : एक डरा हुआ आदमी समीक्षा

94. डॉ. ज्ञान चतुर्वेदी : कहानियों के समझने के सूत्र

फौजी की डायरी

94. गौतम राजकृषि : शोर है चुना हुआ चुपियाँ चुनी हुई

कवियन की वार्ता

98. विश्वनाथ त्रिपाठी : दो काम आप कभी नहीं कर पाएंगे

कथादेश

कथादेश का अप्रैल 2019 अंक स्त्री-विमर्श-2 के रूप में आना था पर अर्चना जी के निधन के कारण इस बार यह अंक उन्हीं पर केन्द्रित किया गया है. स्त्री-विमर्श-4 अंक अब संभवतः जून 2019 में आयेगा.

संपादक

कुल पृष्ठ संख्या : 16+4

अंदर के समस्त चित्र : पंकज दीक्षित

सम्पादक
हरिनारायणकानूनी सलाहकार
मनीष पाठकप्रचार/प्रसार
मुदितसम्पादकीय कार्यालय
एल-57 बी, विलज्जद गार्डन,
दिल्ली-110095
फो. : 9868382783E-mail :
kathadeshline@gmail.comशाखा कार्यालय
श्रीमती (श्री.) स्मृति सिंह
मन्दिरी रावत, बरदान मार्ग, बन्दे भवन,
जयपुर (राजस्थान)एक अंक का मूल्य 40/-
मूल्य वार्षिक
(व्यक्तिगत) : 400/-
मूल्य वार्षिक
(संस्था तथा लाइब्रेरी) : 600/-
मासिक सदस्यता : 10000/-
वार्षिक (विदेश) : 50 डॉलरसारे भुगतान चेक या बैंक ड्राफ्ट
कथादेश के नाम से किये जायें.कथादेश से सम्बन्धित सभी विवाद
केवल दिल्ली न्यायालय के अधीन
ही होंगे.मुद्रक, प्रकाशक, एम्पाक
हरिनारायण, एल-57 B, विलज्जद गार्डन,
दिल्ली-110095 डाय. स्वास्थिक
आकसेट, एम-120, नवीन जयपुर,
दिल्ली-110052 सं मुद्रित
Dr. (Miss) Delta Kantao
Offg. Principal
Nirmala Institute of Education
Altitude, Jaipur, India

◆ रंगमंच ◆

निर्देशक बनना अच्छा व्यक्ति बनने की शुरुआत है

अनघा देशपांडे

ख्यादेश के इस स्तम्भ में हमारी यह कोशिश रही है कि समकालीन भारतीय रंगमंच के विशाल परिदृश्य की विविधताओं को उसके मग्न स्पन्दनों के साथ आप तक पहुंचा सकें. इस क्रम में कुछ जर्सा पहले हमने एक शृंखला आरम्भ की थी, जिसमें कुछ युवा रंगकर्मीयों अपनी किसी कृति से अपने साक्षात्कार को यानी अपनी उस कृति की सृजन-प्रक्रिया को आपसे साझा किया. एक नाटक के तैयार होने यानी लिखे जाने, पूर्वाभ्यास में आकार लेने और फिर मंचित होकर दर्शकों तक पहुंचने की प्रक्रिया में नाटककार, रंगनिर्देशक, अभिनेता आदि की सिसृक्षा, जीवनानुभव, रंगानुभव और सृजन के अन्तर्द्वन्द्व शामिल होते हैं. इन्हें आप तक पहुंचाना हमारा उद्देश्य रहा. अब तक आप रणधीर कुमार, मानवेन्द्र त्रिपाठी, सुमन वैद्य, अनीता शब्दीश, राकेश यादव, मोना झा, चक्रेश, पुंज प्रकाश, ममता डित आदि को पढ़ चुके हैं. इस शृंखला के दूसरे दौर में आपने अब तक युवा अभिनेत्री गीतांजलि गीत, नाटककार-निर्देशक आशीष टाक, रंग-निर्देशक सौरभ अनंत और युवा रंगकर्मी अंश पावन सिन्हा को पढ़ा. इस अंक में पढ़िए युवा रंगकर्मी अनघा देशपांडे को. मर्मला इन्स्टीट्यूट ऑफ एज्युकेशन, गोवा में परफॉर्मिंग आर्ट्स की असिस्टेंट प्रोफेसर अनघा देशपांडे का बाल-रंगमंच के क्षेत्र में काफी गढ़ान रहा है. करीब 70 नाट्य कार्यशालाओं के आयोजन के साथ-साथ आपने नाट्यालेखन और निर्देशन भी किया है. मराठी, हिंदी, ग्रेजी तथा संस्कृत नाटकों (लग्नाची बेडी, आषाढ का एक दिन, मित्राची गोष्ट, प्रतिमा एक गीत, आधे अघूरे, एक शून्य बाजीराव, शी पाखरे येती, प्रवास, स्वप्नवासवदत्ता, नागानंद, कालिदासप्रतिभोन्मेषः, ए वू फ्राम द व्रीज आदि) में अभिनय के अलावा संत समदेव, तीन 'द', गोष्ट आजीच्या आजीची, स्वप्नवासवदत्ता, नागानंद, फेस ऑफ-लाइन, टाप्सी टर्की टेल्स, सुलूची गोष्ट, द सिंगींग (नृत्य नाट्य) एवं दशावतार दर्शन (लोकनाट्य) आदि नाटकों के निर्देशन का भी विपुल अनुभव अनघा देशपांडे के पास है. वेदहरण व चित्रलेखा आपके प्रकाशित नाटक हैं. इस अंक में अनघा देशपांडे अपने नाटक स्वप्नवासवदत्ता की सृजन-प्रक्रिया को साझा करती हैं. (हृषीकेश सुलभ)

नाटक का निर्माण, अभिनय, दिग्दर्शन, अनुवाद कॉस्ट्यूम डिजाइन..., कई तरह की लेखन भी... सभी प्रक्रियाओं में बार-बार गुजर चुकी हूँ. हर बार अलग-अलग तरह के नाटक की अलग-अलग प्रक्रिया. अलग-अलग निर्देशकों के अलग-अलग अंदाज, अलग-अलग घान के दर्शकों की नई जगह पर तालियाँ. अलग-अलग आलोचकों की नई निराली गलोचना! ...हर बार सुख देती दर्शकों की राहना... हर बार नजर आती खुद की (यांच) भरी कमजोरियाँ. शायद खुद की कमजोरियों से ऊपर उठने की चाह ने ये

या पता नहीं क्या है!... पर ये सिलसिला जारी है वर्षों से.... दो दशकों से.... लगातार! और फिर भी... जब अपने चहेते नाटक की प्रक्रिया के बारे में लिखने के लिए कहा गया, तो नाटक तो तय हो गया, किंतु लिखने की प्रक्रिया शुरू होने में डेढ़ महीना चला गया. कई बार लिखने बैठी भी... और फिर पन्ने फाड़ दिये. पर मन में धिंतन हो रहा था... अब जब पूरी तैयारी से पूरे दो दिन इसी काम के लिए व्यतीत करने की सोचकर लिखने बैठी हूँ तो प्रतीत होता है कि ये न लिख पाना कोई बड़ा एक जालम नहीं था... दो बार कर

चुके एक ही नाटक की दो अलग पीढ़ियों के साथ किया हुआ रंगकर्म महज एक दिग्दर्शकीय प्रक्रिया नहीं थी... 2002-2003 में किया 'स्वप्नवासवदत्ता' का मंचन और अब 2018 में किया उसका पुनर्निर्माण, यह मेरे व्यक्तिगत रंगयात्रा की भी प्रक्रिया थी. रंगकर्म महज एक व्यावसायिक नहीं होता. हर रंगकर्म प्रक्रिया के साथ जरा-जरा अपना व्यक्तित्व भी बदलता रहता है. वह अपने काम में भी झलकता रहता है. ...तो यह आलेख कबल 'स्वप्नवासवदत्ता' की रंगयात्रा की कथा नहीं. इस नाटक के निर्माण में मेरा और मेरे साधियों के व्यक्तित्व का

Angha
Principal
Nirmala Institute of Education
Goa



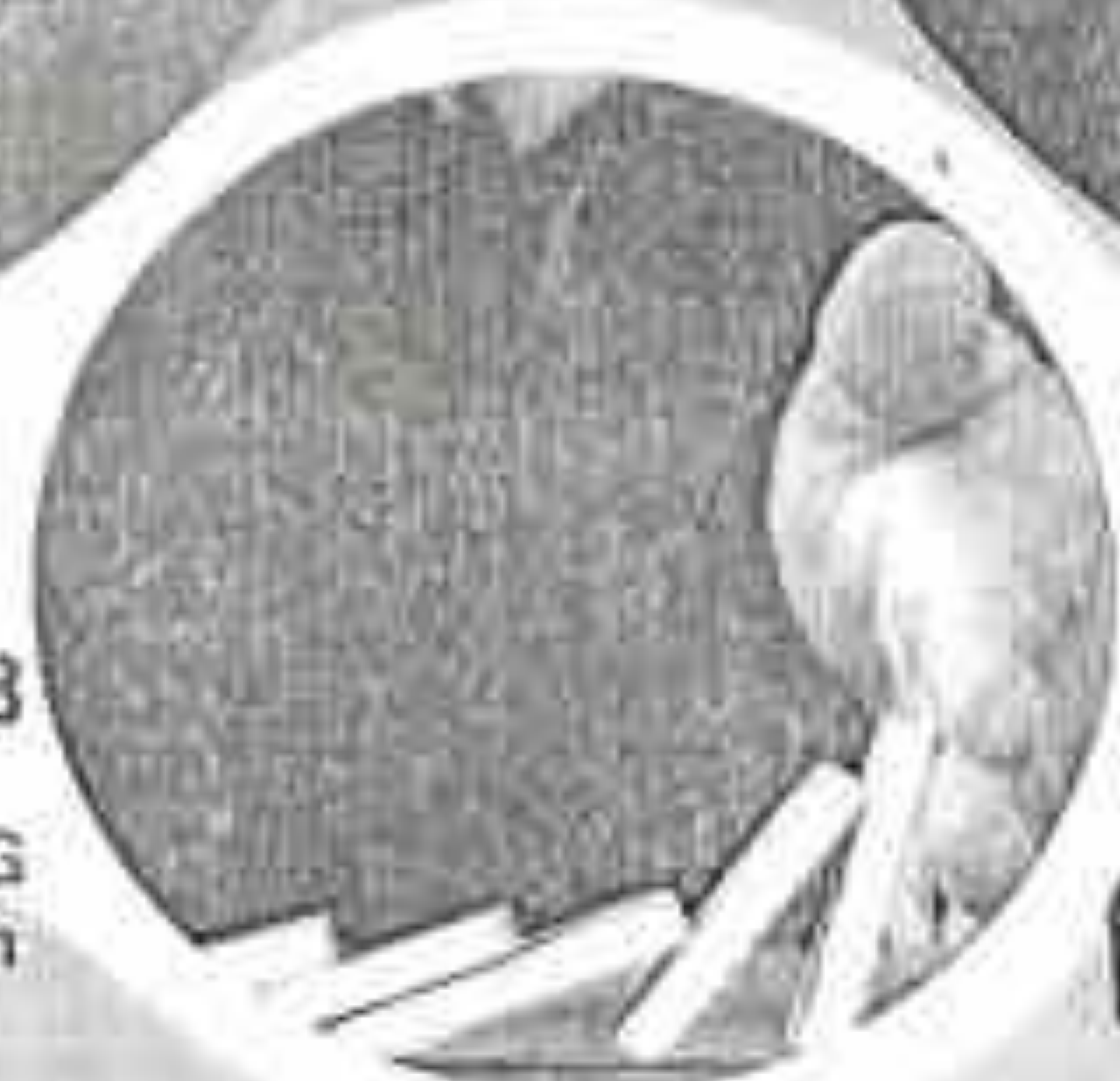
Peer Reviewed Referred and
UGC Listed Journal
(Journal No. 40776)



AJANTA

ISSN 2277 - 5730

AN INTERNATIONAL MULTIDISCIPLINARY
QUARTERLY RESEARCH JOURNAL



Volume-VII, Issue-III
Part - II

July - September - 2018

IMPACT FACTOR / INDEXING
2018 - 5.5 www.sjifactor.com

**Ajanta
Prakashan**

Ajanta
Dr. (Miss) Della Antan
Offg. Principal
Nirmala Institute of Education
Attinba, Panaji, Goa

❧ CONTENTS OF PART - II ❧

Sr.No.	Name & Author Name	Page No.
1	Learning the Kahoot Way An Experience Captured Dr. Russell D'Souza	1-12
2	Technology and Teacher Education: Way towards Effective Teaching Dr. Sandhya Milind Khedekar	13-18
3	Emerging Trends of ICT in Academic Libraries Dr. Sanjay D. Raibole	19-23
4	Challenges Faced and Strategies Adopted by Nurse Educators Regarding Technology Utilization in Nursing Education Dr. Shobha Gaikwad	24-28
5	A Study on Impact of Electronic - Learning on College Going Students Dr. Shraddha Mayuresh Bhome Pranali Laxman Todkar Shubhangi Chandulal Savla	29-33
6	Enhancing Teacher Capability through Training - Role of UGC - HTDC, Osmania University Dr. Sudha Vepa	34-38
7	Measuring the Modernity Attitude of College Students of Bijapur City Dr. Venkoba Narayanappa	39-42
8	Problem Solving Ability among B.Ed. College Students of Kalyan Dr. Vidyullata N. Kolhe	43-45
9	The Role of Aesthetic Education in Schooling Dr. Gangadhara. K. S.	46-52
10	Higher Learning Education Program in Fine Arts (Civilization in True Sense) Dr. Kusum Kanwar	53-59
11	Effectiveness of Training Strategy for Research Guide of YCMOU Dr. Sanjivani R. Mahale Dr. Vijaya V. Patil	60-65

1. Learning the Kahoot Way – An Experience Captured

Dr. Russell D'Souza

Assistant Professor, Nirmala Institute of Education, Panaji – Goa

Abstract

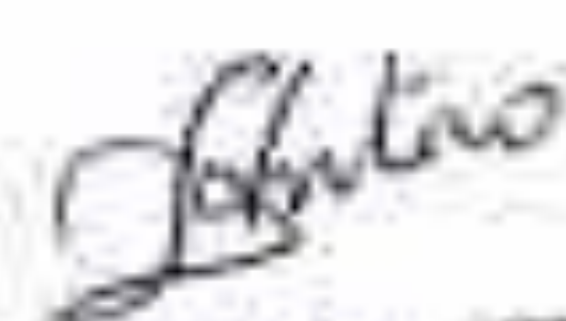
The 21st Century teacher is required to augment and connect learning via innovative digital methodologies as digital technology can excite learners and even provide an engaging alternative vis-à-vis the conventional methodologies. Kahoot an online gaming platform is widely used in classrooms worldwide. The present study exposes students to Kahoot wherein they design a Quiz and Jumbled items following test construction procedures. This paper presents a classroom adventure wherein the B.Ed. teacher trainees created Kahoots and executed them.

Kahoot Interface: The Gaming Environment

The idea about Kahoot emerged from Professor Alf Inge Wang a Professor in Computer Science and Game Technology at the Norwegian University of Technology and Science (NTNU) in Trondheim, Norway. Professor Wang called this idea Lecture Quiz back in 2006. The technology is based on research conducted by Kahoot! Co-founder Morten Versvik for his Master's degree at NTNU, who was a student of Wang's at that time. Later co-founders Jamie Brooker, Johan Brand and AsmundFuruseth joined the company and worked on the UX and design of Kahoot.

Kahoot is an online game based learning platform that is free for classrooms. It is a gamification system that can be played Player v/s Player i.e. 1:1 Devices known as the CLASSIC mode or Team v/s Team i.e. Shared Devices known as TEAM mode in real time. A real time Kahoot is a live Kahoot and hosting a live Kahoot engages the classroom or any other audience. To HOST a live Kahoot one needs a large sized screen to project the Kahoot interface and the audience should have web-enabled devices to enter the game PIN and play.

The Kahoot Pedagogy draws inspiration from several socio-cultural learning theories and socioconstructivism. The aim of Kahoot is to make learning fun, interesting, magical and engaging for all learners irrespective of age.



Dr. (Miss) Delia Antao 111
Offg. Principal
Nirmala Institute of Education
Altinho, Panaji, Goa

CONTENTS OF PART - II

Sr.No.	Name & Author Name	Page No.
12	Towards Creative and Innovative Thinking Through the Significant Application of the Six Thinking Hats Strategy Ms. Maria Eutemia Fernandes	66-70
13	Internet Uses its Impact Undergraduate Students in Devakottai Taluk Gayathri S.	71-75
14	Fundamentals of Written Communication and ICT Hemalatha S. Naik Dr. H. R. Jayamma	76-80
15	A Study of Locus of Control, Anxiety & Aggression among College Students Dr. Heenakshi Bhansali	81-87
16	Emerging Trends and Innovations in E Learning - Challenges of Indian Context K. Gangadhara Chary	88-94
17	Value Education in Educational System Dr. Vijaya Patil Salunke Kalpna Mathabai Shivaji	95-99
18	Need of Use and User Study: Brief Review Dr. Keshav R. Dhuri	100-106
19	Enhancing Emotional Stability of Secondary School Students through Yoga Based Intervention Mani M.	107-112
20	Role of ICT in Teacher Education A. Manohara Reddy	113-118
21	Learning to Teach with Supportive Supervision Maria Ximena Fonseca	119-125

12. Towards Creative and Innovative Thinking Through the Significant Application of the Six Thinking Hats Strategy

Ms. Maria Eutemia Fernandes

Assistant Professor in Education, Nirmala Institute of Education, Goa

Abstract

Edward de Bono's SIX THINKING HAT STRATEGY helps us to think and use our grey matter. It saves a lot of our time, besides helping us to be focussed in our way of thinking or direction and not get distracted. It encourages lateral thinking and helps participants to work against type or preference. And since it helps to reduce confrontation, it helps participants to shed their ego. It also encourages participants to look at the same problem from six different angles, which are represented by six different colours, i.e. Blue, White, Red, Yellow, Green and Black. The hats activate the brain with colour, thus creating a delightful and meaningful experience for those using them to teach, learn and lead. It encourages lateral thinking, thus providing a common language. Here the experience and intelligence of each person is respected and diversity of thought is encouraged. Finally, it assists in creating, evaluating and implementing action plans.

The objective of this paper entitled "TOWARDS CREATIVE AND INNOVATIVE THINKING THROUGH THE SIGNIFICANT APPLICATION OF THE SIX THINKING HATS STRATEGY IN THE GEOGRAPHY CLASSROOM" is to explain with the help of suitable examples the use of a simple yet effective thinking strategy, i.e. Edward De Bono's Six Thinking Hats. There are basically three principles behind this strategy, the first is possibility thinking, as the participants think harder, they find different possibilities or aspects or angles of the problem. The second principle is parallel thinking, where all the participants participate in all aspects of the problem in question simultaneously. Here, there is more of cooperative exploration instead of confrontation. The facilitator encourages sharing of information and discourages arguments, thus encouraging more of thinking. The facilitator also distributes learning material that is needed for the effective implementation of the strategy. Lastly the principle of "out of the box thinking" allows the participants to think freely and contribute their creative ideas to solve

21. Learning to Teach with Supportive Supervision

Marla Ximena Fonseca

Associate Professor, Nirmala Institute of Education, Panjim, Goa.

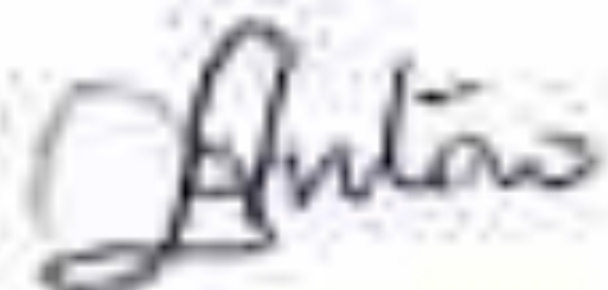
Research indicates that practice teaching is the single most powerful intervention in the professional preparation of a teacher. If that is so, then supervision of the trainee teacher is the single most powerful process in such an intervention. Besides emphasizing the importance of supervision, research literature also reveals how complicated and difficult supervision is. The trainee teacher in learning to teach should necessarily be provided support in the form of supervision of lessons followed by constructive and objective feedback. Keeping this in mind, in this paper I would like to describe what clinical supervision is all about and how we as teacher educators can best put it into practice to improve teaching by playing a supportive role.

Switzer (1976) surveyed trainee teacher perceptions of supervisor's level of helpfulness in sixty specific behaviours which can be grouped into six areas:

1. Supervisory techniques
2. Professional attitudes
3. Pedagogical skills
4. Planning skills
5. Knowledge of children
6. Human relations skills

They felt that they received most help in the area of knowledge of children. They also rated highly the human relation skills of supervisors. The areas most in need of attention were found to be planning skills and general supervisory techniques. The ten planning skills in order of most need of attention were:

- Establishing behavioural objectives
- Knowing that progress sensibly step by step
- Developing lessons appropriate to goals
- Constructing lesson plans
- Employing efficient methods for changing activities
- Providing for motivation
- Using visual aids
- Establishing long range goals


Dr. (Miss) Delia Antao
Offg. Principal
Nirmala Institute of Education
Altinho, Panaji, Goa

❧ **CONTENTS OF PART - II** ❧

Sr. No.	Name & Author Name	Page No.
22	A Study to Explore the Relationship between Learning Approaches and Academic Motivation of College Students: in Indian Context Meghna Basu Thakur Bhavna D. Suleria	126-129
23	The Relevance of Communicative Language Teaching (CLT) in the Twenty - First Century Ms. Millie Adeline Pereira	130-134
24	Globalization and Politics in the I.T. Sector: Case Study Based on Techno Park and Infer Park, Kerala Mithun P. V.	135-140
25	Teachers Perception About: Student Centric Teaching Mrs. Kirti Mangesh Jamdar Dr. Mrs. Prabha Dasila	141-149
26	Online Teaching-Paradigm Shift in Higher Education Mrs. Megha D. Gokhe	150-157
27	Constructivism and Teaching of History Pedagogy Mrs. Sharmila Vilas Kerkar	158-166
28	Role of the Bar Council of India in the Development of Legal Education in India Miss. Tanvi Thakkar	167-172

Antao

Dr. (Miss) Delia Antao
Offg. Principal
Nirmala Institute of Education
Altinho, Panaji, Goa

13. The Relevance of Communicative Language Teaching (CLT) in the Twenty - First Century

Ms. Millie Adeline Pereira

Assistant Professor, Nirmala Institute of Education, Altinho , Panaji-Goa.

Abstract:

Teaching English as a Second / Foreign language has developed into a worldwide phenomenon that seeks to improve the quality of language teaching. The most common solution to the 'language teaching problem' was formerly seen in the adoption of various so-called designer approaches and methods. However, the language teaching profession underwent a paradigm shift in the wake of the Communicative Movement. Communicative Language Teaching (CLT) Approach addressed the functional and communicative potential of languageteaching. As educators we need to reflect on the diverse academic, linguistic and social needs of learners and thus organize teaching around authentic and meaningful contexts that are linked to learners' needs.

Keywords: Communicative Language Teaching, authentic and meaningful contexts, competencies, learner's diverse needs.

Introduction:

Teaching English as a Second / Foreign Language has developed into a dynamic worldwide phenomenon in the twenty-first century that seeks to improve the quality of language teaching and learning by addressing the key issues that shape the curriculum design and methodology. However, simple endorsements of one or other nostrum are of no service to language teaching nor does it lie in the triumphant discovery or rediscovery of a particular format or magic formula. The most common solution to the 'language teaching problem' was often seen to lie in the adoption of a new teaching approach or method. As a result there emerged several so-called designer or brand-name methods, which provided packaged solutions for use anywhere in the world. Thus, the Direct Method was enthusiastically embraced in the early part of the twentieth century as an improvement on the Grammar Translation Method. In the 1950s the Audio-lingual Method was thought to provide a way forward, incorporating the latest insights from the sciences of linguistics and psychology. As the Audio-lingual Method began to fade in the 1970s, a variety of guru-led methods emerged to fill the vacuum created by discrediting

27. Constructivism and Teaching of History Pedagogy

Mrs. Sharmila Vilas Kerkar

Assistant Professor, Nirmala Institute of Education, Altinho, Panaji-Goa.

Abstract

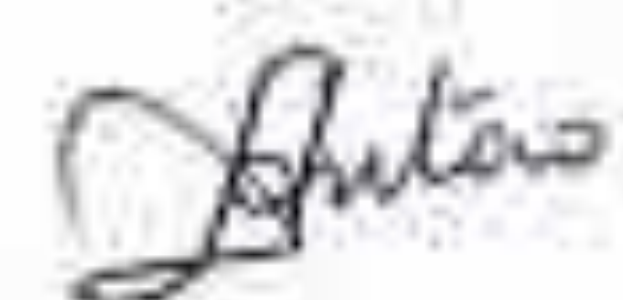
Today teacher educators have a great task of training their teacher-trainees for the Continuous Comprehensive Evaluation process which have become a norm in the schools and higher secondary. To follow the principles of CCE in true spirit, teacher has to use the theory of constructivism in the teaching-learning process. There is an increasing demand to apply the constructivist theory in the teaching-learning of History. This paper intends to share the need of using constructivism as the theory in the teaching-learning of History pedagogy. It is the time now to make History as one of the interesting and activity based subject by using constructivism in the teaching-learning of History pedagogy. This paper highlights on importance of constructivism, method to be followed and different strategies which the teacher-trainees can follow to teach History pedagogy by using constructivist approach of teaching and learning.

Introduction

Constructivism is a theory of learning based on the belief that knowledge is not to be imparted by the teachers but it is to be constructed by the students through their interaction with the environment. The idea of construction of knowledge by the students comes from the fact that humans are builders, shapers and designers, who throughout history have created artifacts from pots to skyscrapers.

The emphasis of the constructivist theory is on the process, rather than the product of learning. The constructivist approach would have the student determine how much they have learned as well as the process by which they have come to know. Such a theory of knowledge and learning has significant implication for teaching. It changes the dynamics of the traditional classroom by empowering the learner as the focus and architect of the learning process while redefining the role of the instructor to be a guide and helper rather than the source and conduit of knowledge. Gaining insight into its core pedagogical principles and how these principles determine or influence the major aspect of classroom instruction.

Constructivism draws on the developmental work of Piaget [1997] and Kelly [1991]. Constructivist teaching is based on the belief that learning occurs as learners are actively





Peer Reviewed Referred and
UGC Listed Journal
(Journal No. 40776)



AJANTA

ISSN 2277 - 5730

**AN INTERNATIONAL MULTIDISCIPLINARY
QUARTERLY RESEARCH JOURNAL**



Volume-VII, Issue-III
Part - I
July - September - 2018

IMPACT FACTOR / INDEXING
2018 - 5.5 www.sjifactor.com

Ajanta Prakashan

Ajanta
Dr. (Miss) Delia Anra
Offg. Principal
Nirmala Institute of Education
Ajanta, Parner, Guj

CONTENTS OF PART - I

Sr.No.	Name & Author Name	Page No.
20	A Study of Effectiveness of Brain Based Learning Strategies to Reduce Math Anxiety Dr. Pradnya Wakpainjan	132-140
21	A Study to Find the Academic Quality Management of Teacher Education College Juhu- Mumbai Dr. Ratnaprabha N. Rajmane	141-150
22	A Study of the Effectiveness of Computer Based Teaching in Higher Education Dr. Roopa K. Nayakodi	151-155
23	E - Learning The Way Ahead Mr. Subodh S. Haldankar	156-162
24	Rejuvenate the Teacher Education Programme by Implementing New Pedagogies Dr. Khan Zeenat	163-168

Ajanta
Dr. (Miss) Delia Antao
Offg. Prin.
Nirmala Institute
Alinho.

23. E - Learning – The Way Ahead

Mr. Subodh S. Haldankar

Assistant Professor, Institute: Nirmala Institute of Education, Altinho, Panaji Goa.

Abstract

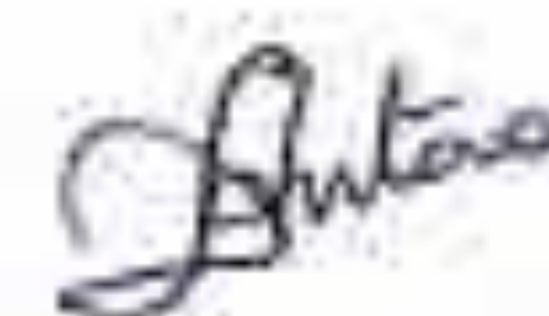
E-learning has become an integral part of the teaching – learning ecosystem in the present times. The demarcation between traditional learning and e-learning has blurred ever since e-learning has come onto the scene. It has been a blessing to all those whose aspirations to continue studies were not fulfilled due to some personal or professional reasons. It is a boon for the society and has been the driving force for technological development in the country. So, it is essential to understand the pros and cons of E-learning.

In this paper, the researcher has attempted to shed light on the advantages and disadvantages of E-learning. E-learning is here to stay and lead our nation into the new age of technological advancement.

E-learning has been the key driver for growth and development of the education sector in the present times. In the earlier days education had a restricted reach as learning was imparted by traditional methods. However, advancement in science and technology has opened multiple avenues for learning. Today, knowledge and information is more accessible to the masses than in the earlier days. The concept of e-learning has radically changed the teaching – learning ecosystem and has broken the barriers of conventional classroom set-up. E-learning has bridged the gap between the learner and learning. It has transformed the landscape of education and made education accessible to people even in the remote areas.

E-learning – Concept and Definition

E-learning is essentially imparting education through computer and network enabled digital technologies which include among other things, internet, intranet, computer, satellite TV, audio and video resources. Therefore e-learning could be broadly defined as the use of Information and Communication Technology (ICT) to enhance and support learning. This could range from teachers and students using e-mail for communication to entirely online courses. This term is used synonymously with virtual learning, online learning, computer based learning, web based learning, and networked learning.



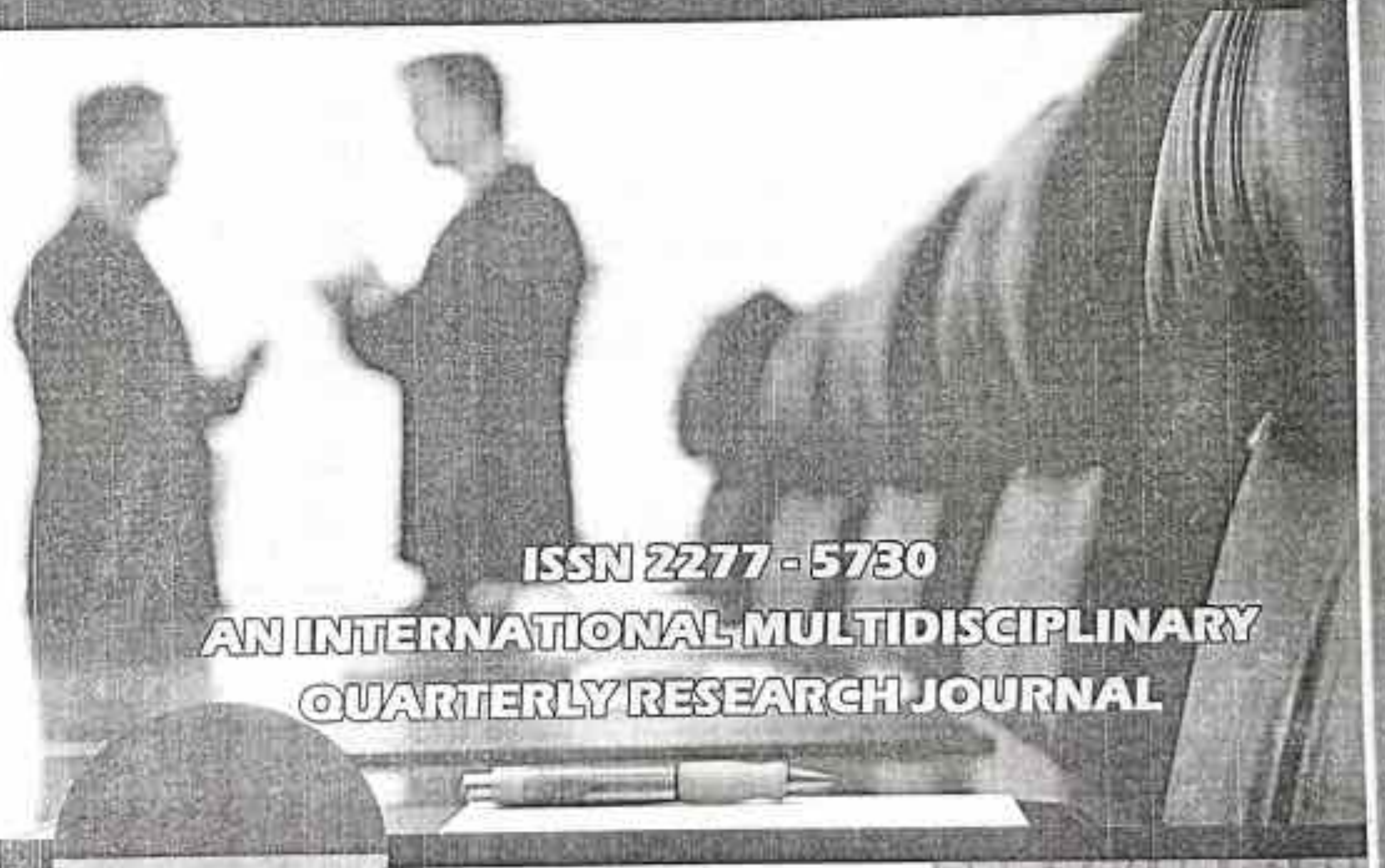
Dr. (Miss) Della Antao
Offg. Principal
Nirmala Institute of Education
Altinho, Panaji, Goa



Peer Reviewed Referred and
UGC Listed Journal
(Journal No. 40776)



AJANTA



ISSN 2277 - 5730

AN INTERNATIONAL MULTIDISCIPLINARY
QUARTERLY RESEARCH JOURNAL

Volume-VII, Issue-III
Part - III



July - September - 2018

IMPACT FACTOR / INDEXING
2018 - 5.5 www.sjifactor.com

Ajanta Prakashan

Ajanta
Dr. (Miss) Della Antah
Off. Dir. ...
Nirmala Inst'
Attinchi



 CONTENTS OF PART - III 

Sr. No.	Name & Author Name	Page No.
1	Dale's Cone of Experience: A Source for Innovative and Effective Teaching - Learning Process Ms. Anju Chaplot	1-6
2	Effectiveness of Interactive Smart Board (ISB), in Teaching of Science Subject - A Literature Review Muntajeb Ali Baig	7-13
3	To Study the Efficacy of Learning Styles Adopted in an Operational Class of Management Studies Naresh Sukhani	14-20
4	Social Perception of Body Esteem among Adolescents and Adults Nidhi Ramani Bhumika Sharma	21-26
5	Role of Librarian as a Bibliotherapist in Higher Education Dr. Pradnaya Anil Bhosekar	27-32
6	Role of ICT in Developing 21st Century Skills in Higher Education Dr. G. Vijayakumari Mrs. Prajnya Sarangi	33-39
7	Co - Operative Learning: A Constructive Approach to Teaching Ms. Pratiksha C. Shirodkar	40-46
8	"Arts and Aesthetics Development as a Way of Thinking and Being" - Need of Higher Education Mrs. Priti Suresh Chandorkar	47-51
9	Importance and Effectiveness of E - Learning in Teaching and Learning Dr. Priya J. Shah	52-58
10	Role of Google in ICT Enabled Teaching, Learning, and Research Prof. Manisha D. Patil	59-65
11	Information and Communication Technology in Education Ranju T. Nair	66-69

7. Co - Operative Learning: A Constructive Approach to Teaching

Ms. Pratiksha C. Shirodkar

Assistant Professor, Nirmala Institute of Education, Altinho, Panjim- Goa.

Abstract

'You can do what I cannot do; I can do what you cannot do. Together we can do great things.' - Mother Teresa

Problems in education have no fixed answers. No teacher education program can prepare teachers for all the situations they will encounter. Teachers themselves will make the final decisions from among many alternatives. Such judgments may be good or poor. Therefore, it is important for teachers to constantly reevaluate their decisions. This can be achieved through Collaborative and Reflective practices in Teacher Education. Co-operative learning in Teacher Education can instill in future teachers the value of social interactions. Reflection improves a teacher's ability to make appropriate and sound judgments and, therefore, become an empowered decision-maker. Cooperative learning is a successful teaching strategy in which small teams, each with students of different levels of ability, use a variety of learning activities to improve their understanding of a subject. Each member of a team is responsible not only for learning what is taught but also for helping teammates learn, thus creating an atmosphere of achievement. Students work through the assignment until all group members successfully understand and complete it.

Key Words: Co-operative Learning, Education, Teaching strategy.

Introduction

Cooperative learning is a successful Teaching Strategy. Cooperative learning groups encourage peer teaching through opportunities to clarify ideas, develop problem solving abilities and decision making strategies and develop responsibility and gain independence. As students work together to explore and experiment, students assist one another and in doing so learn more from actively teaching others.

The National Curriculum Framework 2005 talks about 'The child as a constructor of knowledge': The acquisition of knowledge through active involvement with content, and not

∞ CONTENTS OF PART - III ∞

Sr.No.	Name & Author Name	Page No.
12	Tihar Haat: A Success Story Sabiha More	70-75
13	Flipped Learning - A New trend for the 21st Century Learners Safiya Mulla Dr.Vishnu M. Shinde	76-80
14	A Study on the Mobile Friendliness of Indian Universities and Digital Literacy Mr.Sagar Bhalerao Mrs. Amrin Moger P. J. Mathew Martin	81-88
15	A Review of Suitability and Efficaciousness of Flipped Learning Pedagogy as Conjecture of Egalitarian Philosophy in Higher Education Context Sarika Chhabria Talreja	89-95
16	Prospects of Higher Education: With Special Reference to the Importance of Internship in Legal Education Savina R. Crasto	96-101
17	Revisiting Legal Education with Innovative Teaching Learning Practices in India Dr. Sharmila Ghuge	102-107
18	Physical Education - Path to All Round Development Shobha K. S.	108-110
19	A Study on Student Teacher Preception W.R.T. Innovative Teaching Learning Practices in Higher Education Shraddha Nilesh Kolge Dr. Shraddha Mayuresh Bhome	111-115
20	Equal Opportunity and the Right to Higher Education Shylaja Sherief	116-120

20. Equal Opportunity and the Right to Higher Education

Shylaja Sherief

Assistant Professor, Nirmala Institute of Education, Altinho, Panaji-Goa.

Abstract

India is a land known for the rich and diverse culture of its population. However, one growing concern is that we still live in a society prevalent with prejudice and discrimination based on social class, religion, caste, and gender. There have been some winds of change, a few government initiatives in the form of reservations in employment and education apart from certain programs run by non-governmental organizations. The very purpose of these schemes will be rendered redundant unless the change is all encompassing and wholesome. In this context, the fact remains that a large chunk of masses do not have a fair chance to seek and pursue higher education. This paper provides a critical analysis of where we stand in terms of inclusive growth in higher education, the reasons for the same, and possible measures to ensure fairness in providing the opportunity to every deserving individual regardless of his/her background.

Introduction:

As per a recent United Nations report [1], India has the highest youth population in the world. This makes it a potent force for development and augurs well as far as India's aspirations to become a world super power is concerned. In light of this fact, the role of higher education becomes all the more crucial in shaping our destiny. One formidable challenge is to overcome stereotypes embedded in our society and to lend a helping hand to every deserving person irrespective of social class, religion, caste or gender.

Higher education serves as an important bridge between the elementary training at school and our choice of future profession. It paves the way to help us realize our potential and aspirations. The question is: do our higher education statistics reflect diversity in terms of the aforementioned categories of population? Granted that in a country as vast and diverse as ours, it will be a mammoth task to implement schemes to ensure justice and fairness to all, but it is certainly not impossible. In a democratic setup, the issues of access and equity assume particular importance.

Peer Reviewed Referred
and UGC Listed Journal
(Journal No. 40776)



ISSN 2277 - 5730

AN INTERNATIONAL MULTIDISCIPLINARY
QUARTERLY RESEARCH JOURNAL




AJANTA

Volume-VIII, Issue-I
January - March - 2019
Part - I

Impact Factor / Indexing
2018 - 5.5
www.sjifactor.com

Ajanta Prakashan


Dr. (Mrs.) Della Antini
Offg. Principal
Miramb Institute of Education - 204



**Teaching and
Learning in
PedoCompunity**

Sanjayan T.S
Assistant professor

Assessment for learning-A practice for effective classroom learning

Mrs. Shylaja Sherief, Assistant professor, Nirmala Institute of Education, Panaji, Goa .

Introduction Assessment is an integral part of the education process. If our students learn what we taught, we would never need to assess. However, assessment has become the bridge between teaching and learning. It is only through assessment that we can discover whether the instructional activities in which we engage our students resulted in the intended learning. This is essentially because assessment is one very important component of curriculum practice that has salient contribution for effective curriculum operation and its implementation.

Effective assessment assists learning. The assessment process and the data it generates should be valid (they measure that which they were intended to measure and data are appropriate for the interpretations intended to be made from them) and reliable (consistent over time) for the purpose intended. A poor-quality assessment may give misleading results and lead to poor-quality decisions. Quality assessment is central to good teaching and is inevitably a key component in learning environments that facilitate student's learning with understanding (Donovan & Bransford, 2005).

Therefore, while incorporating the 21st century teaching practices, we should start with updating teacher's arsenal of assessment strategies that they use in the classroom to support their teaching (Jacobs, 2010).

Assessment practices in schools

Assessment can be defined as the systematic and ongoing method of gathering, analyzing and using information from measured outcomes to improve student learning in terms of knowledge acquired, understanding developed, and skills and competencies gained. In schools, the most visible assessments are summative. Summative assessments are used to measure what students have learnt at the end of a unit, to promote students, to ensure they have met required standards on the way to earning



तिसऱ्या सहस्रकारंभी

भारतीय नाट्य



आणि नाटककार

संपादक :

प्रा. विनय मडगांवकर



गोवा विद्यापीठाचे संत सोहिरोबानाथ आंबिये अध्यासन (VRPP)
आणि शासकीय महाविद्यालय केपे यांच्या संयुक्त विद्यमाने
आयोजित राष्ट्रीय परिसंवादात सादर केलेल्या शोधनिबंधांचा संग्रह

Antao
Dr. (Miss) Delia Antao
Offg. Principal
Tirumala Institute of Education
Tirumala, Tirumala, Andhra Pradesh

Antao
al
Education
Goa

अनुक्रमणिका

भारतीय नाटक आणि नाटककार - प्रेमानंद गज्जी	१३
मालवणी नाटक व मराठी नाटक यांचा अनुबंध - डॉ. बालकृष्ण लळीत	२३
कोंकणी विनोदी नाटक : दशा आणि दिशा - डॉ. राजय पवार	३२
'तिसऱ्या सहस्रकातील गुजराती रंगभूमी' : एक संक्षिप्त आलेख - डॉ. करंदीकर संजयकुमार	४०
एकविसाव्या शतकातील हिंदी नाटक - डॉ. रमिता गुरव	४३
कन्नड पथनाट्य आणि वर्तमान समस्या - डॉ. प्रभा वी. भट्ट	५०
तिसऱ्या सहस्रकारांभी कोंकणी नाटक आणि नाटककार - डॉ. प्रकाश वजरीकार	५७
तिसऱ्या सहस्रकारांभी गोमंतकीय मराठी नाटक - सारिका आडविलकर	६२
तिसऱ्या सहस्रकारांभी 'कोंकणी तियात्र' - डॉ. कॉज्मा फेर्नांडीस	६२
'२१ व्या शतकातील कोंकणी एकांकिका : स्वरूप आणि समीक्षा' - डॉ. हनुमंत चोपडेकर	७५
सामाजिक आशयाचे पौराणिक नाटक 'अश्वत्थामा हतः '२' - डॉ. शैलेश विश्वनाथ त्रिभुवन	८६
ऐतिहासिक महानाट्यांचा विषय 'छत्रपती शंभूराजे' - प्रा. विनय मडगावकर	९८
श्री विष्णु सूर्या वाघ यांच्या २००० नंतरच्या नाट्यसंहिता - देविदास शंकर आमोणकर	१०५
विठ्ठल गावडे यांच्या सामाजिक नाट्यसंहिता - प्रा. सोनिया सावत	११८
समकालीनांना खुणावणारी, भासाची अभिजात नाटके - प्रा. अनघा देशपांडे	१२७
मराठी नाटकांचे चित्रपटात माध्यमांतर - उर्वी भट्ट	१३९
तिसऱ्या सहस्रकारांभी भारतीय नाट्य आणि नाटककार.....	४

Dr. (Miss) Della Antao

Dr. (Miss) Della Antao
Offg. Principal
Nirmala Institute of Education
Altinho, Panaji, Goa

समकालीनांना खुणावणारी, भासाची अभिजात नाटके

प्रा. अनघा देशपांडे
परफॉर्मिंग आर्ट्स,
निर्मला इन्स्टिट्यूट ऑफ एज्युकेशन, गोवा.

प्रस्तावना

'सर्व शास्त्रार्थसम्पन्ने सर्वशिल्पप्रवर्तकम् ।

नाट्याख्यं पञ्चमं वेदं सेतिहासं करोम्यहम्॥'

अर्थात : सर्वशास्त्रांनी संपन्न, सर्व शिल्प स्थापत्य शास्त्रांना उत्तेजन देणारा, इतिहासाने युक्त असा 'नाट्य' नावाचा पाचवा वेद मी निर्मिला आहे.- भरतमूनी

भरतमूनींच्या नाट्यशास्त्रातील पहिल्या अध्यायामधील हा श्लोक नाट्यशास्त्राचा आवाका सांगून जातो. इ. स. पूर्व दुसऱ्या शतकात नाट्यशास्त्राची निर्मिती झाली असं मानलं जातं. नाट्यशास्त्रामध्ये नाट्यनिर्मितीशी निगडित सर्वच बाबींचा शास्त्रशुद्ध दृष्टिकोनातून विचार केलेला आहे. रंगमंच, प्रेक्षक, अभिनायाच्या चार पद्धती, भाव, रसनिष्पत्ती याशिवाय नाट्य सादरीकरणाचे प्रकार (दशरूपके) आणि नाट्यलेखनाची कार्यपद्धतीही भरताने सांगितली आहे. अर्थप्रकृती, कार्यावस्था, संधी आणि अर्थोपक्षेपक यांचा योग्य वापर करून कथावस्तू कशी विकसित करावी हे नाट्यशास्त्राच्या इतिवृत्त या एकोणिसाव्या अध्यायात सांगितले आहे. अश्वघोष वगळता भास, शूद्रक, कालिदास, चंद्रक, श्रीहर्ष, यशोवर्मन, अनंगहर्षमातराजा, मुरारी, अनर्घराघव, वत्सराज, बोधायन, राजशेखर हे समस्त भारत वर्षातील नाट्यरचेता / कवी ह्यांचा काळ भरताच्या नाट्यशास्त्रानंतरचा असल्याने त्यांची संस्कृत नाटके नाट्यशास्त्राच्या नियमानुसार रचलेली आढळतात. या सर्व संस्कृत नाटकांना 'अभिजात नाटके' अशी मान्यता प्राप्त आहे.

तिसऱ्या सहस्रकारंभी भारतीय नाट्य आणि नाटककार.... १२७

Dr. (Miss) Della Antao
Off. Principal
Nirmala Institute of Education
Altika, Benet, Goa

THEATRE



MYRIAD SPACES

INDIAN THEATRE AND BEYOND

Edited by

CHANDRADASAN

a lokadharmi publication



Dr. Chandradasan Varma
1935 - 2020
Centre for Cultural Studies
University of Hyderabad

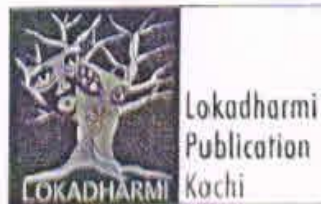
MYRIAD SPACES

INDIAN THEATRE AND BEYOND

Edited by
Dr. Chandradasan

Co-editors
Dr. Ajay Joshi
Anjali George

Editorial Team
Anagha Deshpande
Dr. Appu Jacob John
Aswathy Ramachandran
Zubin Khetani



Autas
Dr. (Miss) Delis Autas
Offg. Principal
Gurukul Institute of Education
Altinho, Panaji, Goa

Myriad Spaces: Indian Theatre and Beyond

Published by

Lokadharmi Kochi

2/A4/13, South Star Apartments,

Ernakulam, Kochi- 682035

Tel: 09447414200

Email lokadharmikochi@gmail.com

First published in India in 2021

© Lokadharmi Kochi 2021

Edited by Chandradasan

Design and Cover: Shobha Menon

ISBN: 978-81-95221-20-2

All rights reserved. No part of this book may be reproduced or transmitted, except brief quotations, in any form or by any means, electronic or mechanical, including photocopying, recording, or any information storage, or retrieval system, without prior written permission from the publisher.

Printed in India

By Anaswara Offset Printers, Elamakkara, Cochin 682026


Dr. (Mrs) Della Antao
Off: Principal
Nirmala Institute of Education
Attika, Panaji, Goa

should I follow? At first, I thought that I would do a multilingual production, each actor speaks in his/her own language. But it would have taken too much time to translate, to get into the nuances of each of the languages etc. So, I stuck to Hindi as the language. A Bengali boy who was doing the role of Dushyantha in that production has to speak the language with correct grammar; the use of *kaa, ke, ki*, etc. I asked him not to strain to change the way and accent of his usual speech, but to keep the grammar right. The Bengalis make a lot of 'O' sound. I did not try to make it Delhi Hindi. Speak your own Hindi, but see that it carries the meaning, purpose, subtext and motive of the character. Another actor was from Manipur. He wasn't able to say '*Beti, Idhar Aao*'! He used to say it differently. When he entered the stage and said '*Bhethi Idhor Aaoo*' with his Manipuri look and heavy accent, there was laughter in the audience initially. But later there was absolute silence. Nobody complained about his language, that he is not speaking proper Hindi.

Theatre is not about the authenticity of the language and nobody can decide and dictate which the authentic language is! The attempt to implement the authenticity of one language and culture over the rest of the country is the problem this nation is facing. There is a multitude of cultures, and a multitude of dialects, which we have to respect and accept.

This is not limited only to India and Indian languages. We can ask which the authentic English is. Is it the Oxford English? Or the Scottish English? Or the American? Or the Hinglish or Chinglish that are emerging? For example, to perform Hamlet in India which shall be the English to be used? The Oxford English or the American? To me if you want to be really authentic then you have to use a language with a touch of Danish, since this character comes from Denmark. But the essence of theatre does not rest on such authenticities, it is rather on the whole relevance of the play that is performed 'here and now'.

Transcribed by **Prutha Parab**

Edited by **Anagha Deshpande**

to be a commentary on current social priorities. For that, it would help if actors are given exposure to the folk arts, so that they can communicate the physicality of the place, because theatre is not just dialogue, it is more about the physical energy that you transmit.

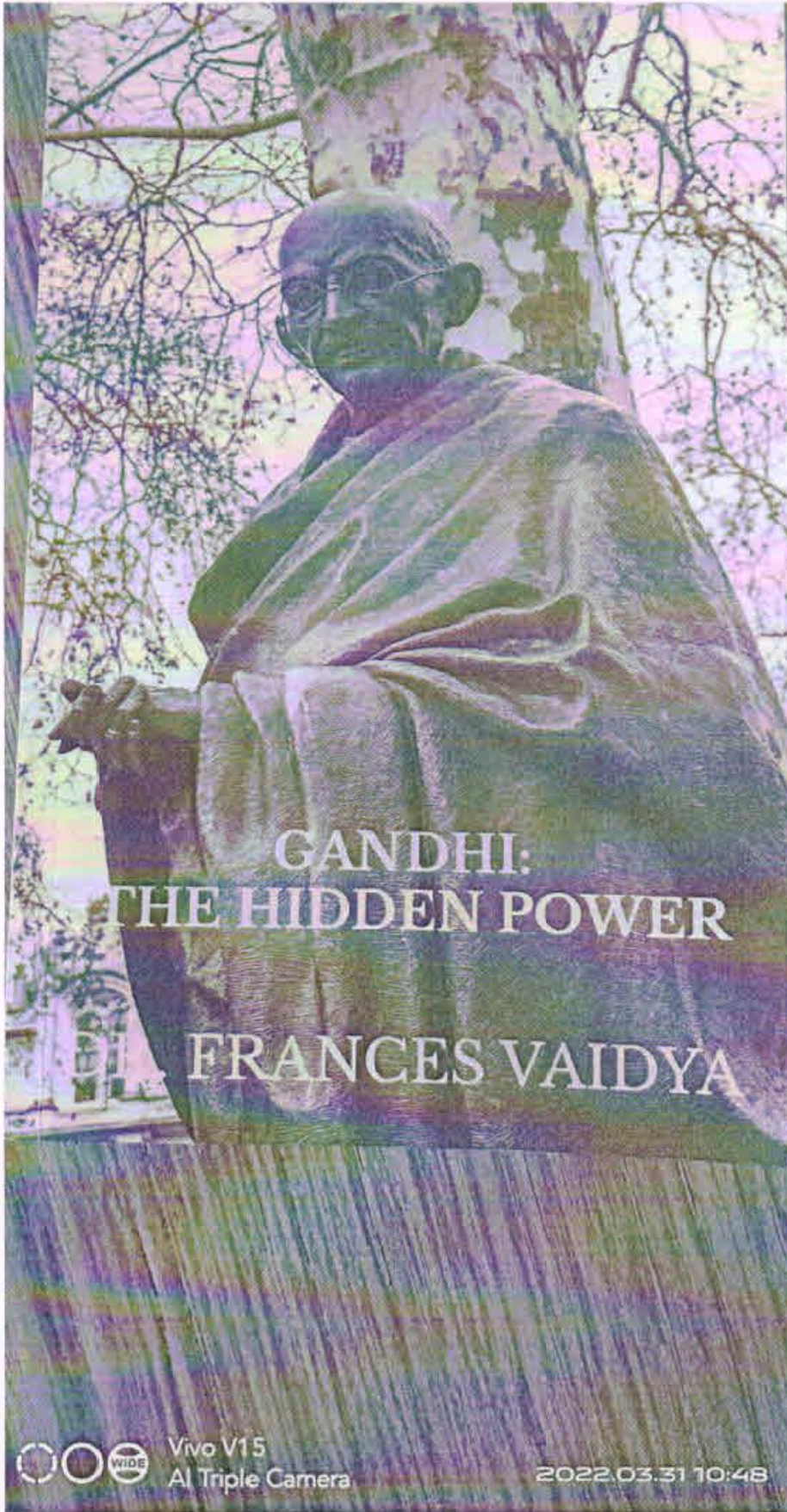
King Lear was socially and politically relevant to Kashmir. One of these *Bhand* actors once said, "Shakespeare must be a *Sufi*". This is not a story of one king; it is a story of a country. If you have a king like that, everybody will suffer. If you have a family like that, you will suffer. If you have a village where you have a kid like that, you will suffer. So, when we did this play, we were talking about something else.

When I did the performance for the elite audience consisting of civil servants, officers, and academia of Srinagar, a few of them said, "Shakespeare! These village actors? What will they do?" Their attitude was as if the village performers were Dalits! During the interval there was pin drop silence; I was watching public, I was not watching the play. During the second act, I saw a lot of people wiping the tears. And they were stunned after the performance! They could not believe. A professor came and she was holding hands of *King Lear*, and asked, "Where did he learn this amazing body language?" Let me tell you, Shakespeare was a *Bhand*. He was not a professor. He never wrote for professors. You have manipulated him to get your jobs. He was a performer. He wrote for his actors. He had his dirty boxes of costumes like them, they carry them. Theatre is not a literary exercise; it is an organic thing!

Shane: Could you suggest any books about Kashmiri literature or Kashmiri plays? Does this form of *Bhand* influence any writers?

Only one playwright, Moti Lal Kemmu, (who wrote plays like *Bhand Duhayeei* and *Tota Tol Aina*) did quite a good work and had got a Sangeet Natak Academy Award. He was one who understood the inside out of this form.

Edited by **Anagha Deshpande**



D. Antas
Dr. (Miss) Della Antas
Offg. Principal
Nirmala Institute of Education
Altinho, Panaji, Goa

Contents

<i>Foreword</i>	vii
<i>Acknowledgements</i>	ix
1. Gandhi's Experiential Learning	1
2. Mahatma And Women Empowerment: A Case Study Review Of Mahila Shanti Sena	7
3. Nai Talim - A Philosopher's Stone And Its Relevance Through Eight Decades	12
4. Mahatma Gandhiji And Experiential Learning	18
5. Gandhi's Trusteeship As An Instrument Of Human Dignity	22
6. Gandhi's Craft Centered Education	30
7. Gandhi On Women	35
8. Mahatma Gandhi: The Father Of Naturopathy	38
9. Relevance Of Gandhiji's Contribution To Education In Contemporary Educational Institutions	43
10. Experiential Learning: The Basis Of Gandhian Philosophy	50
11. Gandhiji's Concept Of Education - Nai Talim	55
12. Gandhi On Peace	59
13. Gandhiji: An Environmentalist	63
14. Gandhi On Health: Swachh Bharat Abhiyan In Secondary School - A Reality Or Myth	67
15. Education From Mahatma Gandhiji's Perspective	74
16. Relevance Of Education System Expected To Gandhiji In The 21st Century	78
17. Be The Change You Want To See In The World' Gandhi	84

CHAPTER NINE

RELEVANCE OF GANDHIJI'S CONTRIBUTION TO EDUCATION IN CONTEMPORARY EDUCATIONAL INSTITUTIONS



Mrs. Suvarna Gauns Associate Professor

Mrs. Ximena Fonseca Associate Professor

Nirmala Institute of Education, Altinho, Panjim, Goa

"What are seen as oddities by Gandhiji's critics can almost always be found to embody a deep consistency with some basic principle of Indian Philosophy, brought UpToDate and freshly applied to a contemporary situation."

In this paper we would like to revisit Gandhiji's aims of education and his specifications of the role of the teacher and learner and freshly apply it to a contemporary world.



A Perspective on an Interdisciplinary Approach to Education

Russel D'Souza ; Nandini Vaz Fernandes

Modern Perspectives in Language, Literature and Education Vol. 8, 10 August 2021, Page 105-113

<https://doi.org/10.9734/bpl/implle/v8/4067F>

Published: 2021-08-10

[View Article](#)

[Cite](#)

[Share](#)

Abstract

Interdisciplinary learning is fundamentally a process in which learning is not compartmentalized in a way that it crosses traditional disciplinary boundaries, and, most significantly, allows learners to evaluate their own learning. Encouraging learners to think divergently, laterally, and to apply conceptual thinking to the world around them to help them understand different domains needs a focused strategy. Interaction of various subjects is what keeps things fascinating to the learners. The present study proposes two ways by which an interdisciplinary approach of teaching-learning can be applied. The proposed strategies are systematic approaches to promote creativity, critical thinking, deep learning and team-based work abilities in the learners. The success of multidisciplinary and experiential learning thus depends on this shift in focus and strategy.

Keywords: Engaging students; performance task; mathematical concepts; higher-order

Dr. (Miss) Delia Antao
Offg. Principal
Nirmala Institute of Education
Altinho, Panaji, Goa



**Sanskar Mandir Sanstha's
Arts and Commerce College**
Warje – Malwadi, Pune - 411058
(Id. No. PU/PN/AC/149/2000)
(Affiliated to Savitribai Phule Pune University)
National Level E-Conference



“PHYSICAL EDUCATION, SPORTS, HEALTH & YOGA”

29th April 2022

Certificate of Presentation

This is to certify that Mr. Fernandes Clifton Moses *from* Nirmala Institute of Education, Altinho, Panaji, Goa *has Presented paper in the Conference organised by the Department of Physical Education & Sports, Sanskar Mandir Sanstha's Arts & Commerce College, Warje- Malwadi, Pune – 58.*

Title of The Paper : Understanding The Inter-Village Football Tournaments in Goa – Stakeholders, Structure, Economic Aspects and Contribution to Goan Football

Mr. Abhijit Parse
Coordinator

Dr. Rajendra Thorat
I/C Principal

Dr. (Miss) Della Antao
Offg. Principal
Nirmala Institute of Education
Altinho, Panaji, Goa

अंक-24

ISSN 0975-5217

UGC-CARE LIST (GROUP-I)

वर्ष 2022

भैरवी

(दृश्य एवं प्रदर्शनकारी कला की शोध पत्रिका)

अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलन विशेषांक



मिथिलांचल संगीत परिषद्

स्नातकोत्तर संगीत एवं नाट्य विभाग

जलिल अहमद मिथिला विश्वविद्यालय

कामेश्वरनगर, दरभंगा (बिहार)

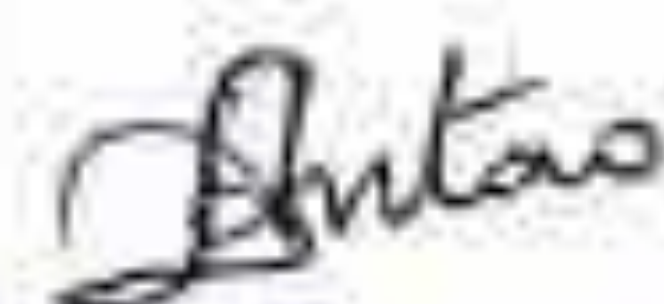
Dr. Jyoti Datta
Editor
Bhairavi
Journal of
Visual and Performance
Arts Research

अनुक्रम

- संपादक की कलम से ... 11
1. Use of Drama and Theatre in Supplementing the Pedagogy of Legal Education in India *Dr. Saba V.M. Da Silva* 17
 2. Lostaciti & Cutalakküttu— A rare blend of Vedic rites with Theatre *Dr Prabhavathy P N* 24
 3. Theatre : An Agent of Developing Various Intelligences *Mr. Silvester Vaz* 31
 4. An Art for an Art: Incorporating Elements of Theatre in Pedagogy of English Literature *Saiee Ganesh Dhargalkar* 34
 5. A Study on Level of Metacognitive Awareness of Drama Students *Ms. Pratiksha Shirodkar* 43
 6. Puppets as Pedagogical Tool in Formal Education *Ms. Anagha Deshpande, Dr. Sanjay Patil Devlankar* 50
 7. Applications of Stanislavski principle's in understanding and implementing Yoga in daily life *Ms. Gauri Ravindra Patake, Ms. Anagha Saish Deshpande* 60
 8. Effect of Street Theatre on Expressive Language, Motor Coordination and Social Interaction of Children with Autism Spectrum Disorder: A Qualitative Pilot Study *R. M. Tamil Selvan and S. Silamboli* 68
 9. Enhancing Reading Motivation and Reading Comprehension in Students Using Multiple Intelligence Strategies *Hemali Gada, Prof Preeti Verma* 75
 10. Theatre in Design Education *Dr. Rikimi Madhukaillya* 82
 11. Theatre for Collaborative Intelligence *Isabel de Santa Rita Vás* 88
 12. Pedagogical Techniques for Preservation of Indigenous Theatre Forms (With special reference to Goa) *Dr. Saish Deshpande* 95

13. Let's Play! Harnessing the Power of 'Elements of Theatre' as Pedagogy in Early Learning Environments: Perspectives From Research and Practice *Larissa Rodrigues, Dr. Nadisha Coelho* 105
14. How Drama Rehearsals Impact the Expression of Speech in Children: A Study *Radhika Pendse and Dr. Sanyukta Thorat* 114
15. Theatre Education for School Teachers and Role of Theatre Teacher in Skill Development of Students *Sanket Shankar Khedkar, Dr. Sanjay Patil* 121
16. Art Integrated Learning and the Challenges of Finding Pedagogical Equilibrium in Learning Concepts Through the Arts *Amritha Sruthi Radhakrishnan* 128
17. Behaviour of Academic Librarians from a Dramaturgical Perspective *Anju Pai Bhale* 135
18. Developing Different Kinds of Intelligences Through Theatre *Dr. Uday Kulkarni* 141
19. Melioration of Competencies with Theatre as an AID *Dr. Shilpa D.Parab* 148
20. NSD Tie's Pan-India 'Online Special Workshop' : Drama-in-Education Pedagogy in Times of Peril *Antara Prabhakar Bhide* 155
21. Nurturing the various types of intelligence through Performance Arts *Arantxa M.I Fernandes* 164
22. Pedagogical Belief of Student-teachers about Theatrical Element: Role Play in Teaching Methodology *Sangeeta Rajaram Kadam, Dr. Anna Neena George* 171
23. Element of Theatre Based Pedagogy: New ways of Incorporation Theatre into Science, Humanity, and Arts *Ajay Kumar* 183
24. Enhancement of Skills Through Drama *Mamta Alias Sana Gawas (S.Y.M.Ed)* 190

25. Using Theatre as a Tool to Enhance Skills
Maclina Serolina Furtado, Shannon Dielle Saldanha 195
26. Enhancing The Growth of Differently
Able Through Theatre *Anabelle Karen D'Cunha* 203
27. Identifying the Theatrical Possibilities of
Kutiyattam for Non-Formal Education *H. Chamanee Darshika* 211
28. Revisiting Teaching-Education in Performing
Arts in 21st Century *Dr. Mrityunjay Kumar Prabhakar* 219
29. Computational Thinking meets Performing
Arts - A Case Study *Dr. Russell D'Souza* 225
30. A Study on the Usage of Theatre to Increase
Academic Motivation to Positively Impact
Executive Functioning *Dr. Gargi P. Sinha* 235
31. Understanding Teacher-Student Communication
Process Using Drama Interventions:
A Transactional Analysis Framework *Sofia Dhamani* 246
32. Theatre and School Classrooms: A Study on
Bringing Theatre as a Teaching Tool in the
Classrooms of Kerala *Abhirami Jayaraj, Jorlin Jose* 253
33. Use of Role-Play Method in Teaching
Commerce Subjects: Few Experiments *Prashanti Talpankar* 260
34. Use of Theatre in Teaching Geography *Daniella Maria Colaco* 266
35. Use of Theatre Art as a Classroom
Practice for Teaching Mathematics in School
Mrs. Ximena Rodrigues e Fonseca, Dr. Jojen Mathew 276
36. Assessing the Effectiveness of Theatre Arts
in Teaching Concepts in Biology *Megan Maria Barreto* 284
37. Incorporating Elements of Theatre Into Subject
Pedagogies of Sciences, Arts and Humanities *Zo Vaishnavi Dilip* 289
38. Theatre pedagogy and Social Work Education *Dr. Baily Vincent,
Harish. R, Lavanya Ezhilarasi. R, and Indhu.K* 296
39. Social Inclusion of Children with Autism Spectrum
Disorder Through Performing Arts *Sharwari Prabhudesai* 305



Dr. (Miss) Della Antao
Offg. Principal

Nirmala Institute of Education

40. Teaching and Learning Through the
Theatrical Approach: an Artistic Tool *Dr. Ajay Malpani,
Ms. Bhavna Pathak, Dr. Zuber Khan* 312
41. Theatrical presentation of the content does
helps students to digest the concept easily
and effectively *Nitin Suryakant Garud* 322
42. Effect of Role Playing on Academic
Achievement of Secondary School
Students of Goa in the Post -Covid Era *Mrs. Sharmila V. Kerkar,
Jojen Mathew* 327
43. शिक्षा में नाटक और इन्फोड्रामा (Shiksha Me Natak
aur Infodrama) *डॉ. पुष्पम नारायण, सुनिता भारती* 333
44. जीवन कौशल विकास में नाटक की भूमिका *डॉ. अमोल श्रीराम देशमुख* 340
45. शिक्षा में रंगमंचीय कला का अनुप्रयोग :
विशेष संदर्भ थिएटर इन एजुकेशन (TIE-संस्कार रंगटोली) *डॉ. नितप्रिया प्रलय* 346
46. Elements of Indigenous Theatre forms as an aid
for non-formal education *Amruta Rushiraj Salvi* 352
47. नाटक के माध्यम से कौशल सुधार *प्रो. डॉ. चरवड गिरीश, प्रो. डॉ. जगदिश खैरे* 358
48. रंगमंच और कौशल विकास *किशोर शिरसाट* 361
49. रंगमंच के माध्यम से विभिन्न प्रकार की वृद्धि का विकास करना
प्रो. डॉ. जगदिश खैरे, प्रो. पोतदार किशोर 365
50. खान्देश का लोक कलाओं के माध्यम से कौशल विकास
(Skill Development Through Folk Arts In Khandesh)
वैभव पुंडलिक मावळे, प्रो. डॉ. संजय पाटील 372
51. स्नातक स्तर के शिक्षा में कौशल वृद्धि के रूप में रंगमंच
(Theatre as Skill Enhancement in Graduate Level Education)
रोहित कुमार 377
52. ली स्टार्सबर्ग की पद्धति का चिकित्सकीय
(Therapeutic) प्रयोग *पायल अमर पांडे* 381
53. नाटक कला और संवादशीलता *प्रो. स्मिता प्रेमानंद सावळे* 384
54. विदर्भ का लोकनाट्य खडीगंमत का नागपुर जिले
के अनौपचारिक शिक्षा में योगदान *वैदेही चवरे, डॉ. संयुक्ता थोरात* 388
55. रंगमंच के माध्यम से कौशल वृद्धि विकास
प्रो. पोतदार किशोर, प्रो. डॉ. चरवड गिरीश 391

A Study on Level of Metacognitive Awareness of Drama Students

Ms. Pratiksha Shirodkar

Abstract

Metacognition is being aware of your own self. To be precise being aware of one's cognition and ways of regulating the cognition. It deals with understanding one's self and being aware of how one functions at the cognitive level. It is the process of thinking about thinking or our ability to know what we know and what we don't know. The main purpose of this research is to understand the level of metacognitive awareness of drama students and also to understand if gender, locality and qualification has any influence on the level of metacognitive awareness of drama students. The study was conducted on a sample of 53 drama students from the State of Goa. A Metacognitive Inventory was used as a measure of metacognition of students. The finding of the study reveals that a majority of drama students had a high level of metacognition and it also found that gender and locality have no significant impact on the metacognitive awareness of students while qualification of drama students was found to have had a significant impact on it. This study suggests that more emphasis should be laid on metacognitive awareness at the Post-graduate level in order to strengthen it, as it also would help the students in future to excel in the field of drama.

Keywords: Metacognitive awareness, drama

Introduction

Metacognition is being aware of your own self. To be precise being aware of one's cognition and ways of regulating the cognition. It deals with understanding one's self and being aware of how one functions at the cognitive level.

The concept of metacognition is of recent origin in cognitive theory. It is the process of thinking about thinking or our ability to know what we know and what we don't know. It refers to higher order mental processes involved in learning, such as making plans for learning, using appropriate

Puppets as Pedagogical Tool in Formal Education

Ms. Anagha Deshpande*, **Dr. Sanjay Patil Devlankar****

Abstract

This research was conducted at 'Nirmala Institute of Education (NIE) - Goa, in the academic year 2021-2022, based on use of glove puppet as a pedagogical tool in formal education. The purpose of this research is to systematically train teacher trainees to use glove puppets skillfully, to teach their respective subject method, and report the benefits and possibilities of the use of puppets in lesson planning. The steps followed were as follows:

- a. Conducting a workshop on 'Puppet making',*
- b. Skilful utilization of puppets,*
- c. Data collection of utilization of puppets for each available subject pedagogy by S.Y. B.Ed. students (Teacher Trainees) at NIE and,*
- d. Survey of the research thus available.*

As a result, various ways of utilisation of puppets were observed in four major sections of lesson planning. Conclusion thus derived includes:

- Various kinds of utilisation techniques,*
- Benefits to learners.*

Puppets can be used in teaching most of the subjects in numerous ways. It is helpful in teaching grammar concepts, character sketches, introduction to concepts, role plays, storytelling, to assign creative assignment for students, classroom management, establishing routines and teaching vocabulary. The students become more attentive in the classroom and understand the content easily. Use of puppets makes the lesson interesting and engages the students throughout the lesson.

Key Words: *Puppets, Lesson, Glove-puppet, Education, Pedagogy.*

* Assistant Professor in Performing Arts, Nirmala Institute of Education, Goa.
and

Part Time Research Scholar, Department of Dramatics, Dr. Babasaheb Ambedkar Marathwada University, Aurangabad. Email- anagha_abhivyaktee@gmail.com, Ph. No. 9657610902

** Research Guide, Vice Principal and HOD Dramatics, K.S.K. College, Beed, Maharashtra.

Applications of Stanislavski principle's in understanding and implementing Yoga in daily life

Ms. Gauri Ravindra Patake*, Ms. Anagha Saish Deshpande**

Abstract

Konstantin Stanislavski, Russian theatre practitioner, has developed a systematic approach to train actors. His system "Art of experiencing" contrasts the "Art of representation". It mobilizes the actor's consciousness to subconscious feelings, emotional experiences, and psychological impacts of the surroundings as well as that of the mental environment. He also focuses on the relaxation of the muscles which are not in use while taking any pose. His theories and his work can be co-related to Yoga. These correlations of Stanislavski's theories to Patanjali Yoga sutras are very significant. In this paper, the noteworthy interrelationship of Stanislavsky's principles and Maharishi Patanjali's 'Patanjali Yogasutra' are studied. Major theories co-related to yoga sutra are 'Concentration and attention', 'Relaxation of Muscles'. Detailed explanation of Patanjali yog sutra is elaborated with the help of Vyasa bhashya in this paper.¹

Keywords: Stanislavski's system, Techniques, Relaxation, Concentration, Theatre, Yogasutra

Introduction

Stanislavski, the founder of 'Moscow Art Theatre' (MAT). There were very raw theatrical Practices before the establishment of MAT in Russia. Previously, there was a bit of a casual attitude regarding the acting. All the stage props were in a way and the

actors always face the audience. That's why direct one-to-one communication with other actors was minimal. It becomes an artificial way of interaction and the expressions of feelings in a role.

Stanislavsky's early productions were done without using his own

* (Corresponding author) : Student, MA Yogashastra, Kavikulguru Kalidas University, Nagpur, Email: gauripatake@gmail.com, Ph. No. 9356671720 and Permanent address for correspondence: 'Padmanabh', Behind Dnyandeep bank, At Pargaon, Post- Khandala, Pin:412 802

**Assistant Professor in Performing Arts, Nirmala Institute of Education, Goa and Part Time Research Scholar, Department of Dramatics, Dr. Babasaheb Ambedkar Marathwada University, Aurangabad.

system. His performances were centered on the actor's internal, director-centered that strove for a naturalistic staging of its elements. Despite this method brought, his Naturalistic staging of Anton Chekhov and Stanislavski was still became the need for his own techniques.

He started developing centered techniques of realism. He then paid more attention to rehearsal processes. There were some blocks with his performances in the past. He made him develop his own techniques for perfection in his plays. In this review, an overview of few Stanislavski's Methods and those are co-related to Yog Sutra.

Outline of the t

Stanislavski Method:

He developed this method in the early 20th century at the Moscow Art Theatre. Stanislavski Technique is derived from his production process. It is still used by casts all over the world. The method is an actor-centered system made up of various techniques designed to help them to really put themselves in the place of a character.

Pedagogical Belief of Student-teachers about Theatrical Element: Role Play in Teaching Methodology

Sangeeta Rajaram Kadam*, Dr. Anna Neena George**

Abstract

This research study aims to find out the pedagogical belief of student-teachers regarding the use of Role play in the teaching-learning process. The objectives of this research are 1) to find the relevance of Pedagogical methods incorporating role play in the development of interpersonal and communicative skills. 2. To find out role play demands thorough preparation on the part of the instructors. 3. To find out role play develops an attitude of problem solving 4. To identify which subjects can be best taught by Role play? The data for quantitative research was collected by using a self-designed 5-point scale questionnaire. The content validity of the study technique was established through experts' judgement. A sample of 100 student-teachers enrolled in three different Bachelor of Education Colleges in the State of Goa affiliated to Goa University were surveyed through on-line mode. Based on the results, the role play method seems to be very well accepted by different pedagogical approaches. There is a considerable amount of seriousness among student-teachers about preparation to be necessary for successful implementation of Role Play. It is seen that 44% of student-teachers 'Strongly Agreed' and 47% 'Agreed' with the statement that instructors require to be thorough with their preparation for Role play. It is important to understand that most student-teachers responded 'Agreed' rather than 'Strongly Agreed' to the fact that role play helps in the development of attitude of problem solving. It is revealed that 74% of student-teachers with Pedagogy of Science, Mathematics, History, Geography, English, Hindi, Marathi, Konkani, Commerce, Social Sciences are of the opinion that Languages can be best taught by way of Role play. The Kolmogorov-Smirnov Test resulted in a mean of 2.12 and a standard deviation (SD) of 0.844. This indicates that most student-teachers agreed that role play improved learning across all subjects. Role Play significantly assists students in developing problem solving abilities and is approved at a significance level of 0.05. The calculated value of the One-Sample Kolmogorov-Smirnov Test =3.665 with significance level (p)=0.000 is lower than the assumption value i.e., $\alpha=0.05$. As a result, H_0 (Null Hypothesis) is rejected while H_1 (alternative hypothesis) is approved hence it is pertinent to say that role play enhances learning across all subjects with the 0.05 level of significance.

Keywords: Pedagogical Belief, pedagogy, Method of Teaching, student-teachers, Role play.

*Part-time Research Scholar, Assistant Professor, Nirmala Institute of Education, Altinho-Panaji Goa, 9822161501, sangeeta@nirmalainstitute.org

**Research Guide, Associate Professor, G.V.M.'s Dr. Dada Vaidya College of Education, Farmagudi-Ponda Goa, georgeannaneena@gmail.com


Dr. (Miss) Della Antao
Offg. Principal
Nirmala Institute of Education
Altinho, Panaji, Goa

Computational Thinking meets Performing Arts - A Case Study

Dr. Russell D'Souza

Abstract

The present study investigates students learning (understanding) across three strategic concepts through the computational learning architecture making use of few elements of performing arts such as drawings, background music, digital manipulation of objects in real time, movements, group work, use of coloured and appropriately sized learning tools and teacher behaviours.

60 students studying in Class IX in a rural village school were a part of the case study. A three-point scale designed by the investigator to capture the required information for the stated objectives. It was found that students do not differ in their overall perception about efficiency of CT in learning strategic concepts and in their perception on elements of performance on engaged learning. The investigation revealed a positive perception of students towards elements of performance in engaged learning. Creative and colourful material enhanced the aesthetic appeal of learning media while the background music positively impacted learning.

Keywords: Computational Thinking, Engaged Learning, Performing Arts

Introduction

Learning is as complex as decisions to teach. The much-deepened thought before an educational practitioner is, how do I teach, when do I teach and why? And how should this teaching engage learners? The NEP 2020 places emphasis on learner-driven pedagogies that enfold a learner into wholistic inquiry-based learning thereby making learning worthy,

interesting, consuming and growth directed. Taking a clue from the foundations of the NEP 2020, this paper attempts to address a pedagogical concern namely; integration of computational thinking through elements of performing arts.

Computational Thinking

Computational thinking (CT) is a pedagogical approach that encourages

Use of Theatre in Teaching Geography

Daniella Maria Colaco

Abstract

Geography is a study that deals with the structure of the earth, places, people and the environment. Studying Geography can sometimes be a bit abstract and boring. In the last couple of years novel methods of teaching have been adopted to make the subject more interesting. In this study various elements of theatre have been explored to study the subject. Emphasis has been laid on the use of role plays as it is most widely used. The perception of 56 Geography pre-service teacher trainees was gauged by using a 5-point Likert scale consisting of ten items. This scale was administered by using google forms. The data gathered was analysed and the frequency, percentage, mean, standard deviation and mode were calculated. It has been seen that most of them strongly agree that role plays make the lesson more interesting and that role plays can be used more effectively in collaborative teaching.

Key words: theatre, Geography, role play, teaching

Introduction

Theatre is not a new concept; it dates back to time of ancient Greek Philosophers like Aristotle. The word 'theatre' is derived for the Greek word 'theatron' which means 'a place of viewing' or 'to see/watch/observe' (Idogho, 2013). It involves performances to a selected audience. Theatre involves gesture, facial expression, speech, voice modulation, music and dance. There are different art forms in theatre like role plays, monologues, puppets, mimes etc.

Education is the backbone for the development of a nation. It involves learning, which can take place both in the formal and informal set up. "Drama has a great deal to do with pedagogy because it is an art form" (Bolton, 1992 as cited in Valverde 2002). Theatre and drama are a good medium to educate people.

The lecture method is the most commonly used method of teaching which sometimes makes a lesson boring. Novel methods of teaching are being tried out to increase the interest

Assistant Professor Nirmala Institute of Education Mob: 9673243978 Email: daniella@nirmalainstitute.org
DOI: 0000-0001-7342-0063


Dr. (Miss) Daniella Maria Colaco
Offg. Principal
Nirmala Institute of Education
Kollam, Kerala

of students. The education has been This study aims various arts for monologue, role mimes, songs and to inanimate Geography. Amc since role play is an in-depth study perception of pre teachers is gauged

Objectives of the

- To illustrate by which to teach G
- To illustrate be used to
- To study th service te plays to te

Review of Relat

Theatre in educa benefits. Its foc process than th support learning Creative Drama and education. It teaching tool th learning process.

Celikkaya (2 pre-service teach felt that the Dram during spring 20 University was fu self-confidence. T the role-play tech Drama gives real-life situa

Use of Theatre Art as a Classroom Practice for Teaching Mathematics in School

Mrs. Ximena Rodrigues e Fonseca*, Dr. Jojen Mathew**

Abstract

Integrating elements of theatre and the arts in the teaching and learning of Mathematics at the school level is gaining importance and should be used to make it more interesting and enjoyable for the students. Various researchers highlight the use of drama, role-plays, and multiple intelligences as classroom practices for mathematics teachers. Some of the classroom practices that have been suggested are: Put some enthusiasm into mental mathematics, mathematics role-play, using songs to make it stick, use of physical as well as visual representations, dancing mathematics, characterization and using drama as a teaching tool. The benefits of using theatre are manifold. Theatre will reinforce learning because of the individual and active participation of the students. For the students, drama will make mathematical concepts easier to remember. Creativity and innovation will be encouraged as teachers encourage students to use their imagination to play their roles in the best possible manner. It will develop in the students critical thinking which results in a deeper learning of mathematical concepts. Hence school mathematics teachers should make it a point to use the strategies which have been tried and tested by various researchers and are found to improve their academic achievement in mathematics as an added bonus, improvement in their language and communication skills.

Key words: Theatre, mathematics, role-play, multiple intelligences, engagement, critical thinking

Introduction:

Using theatre art as a strategy for teaching mathematics in a fun way would definitely help students to understand and apply mathematical concepts and principles in their daily

life. Engagement of students in learning is a key factor in better retention and increased understanding for students. Theatre provides student engagement in mathematics topics which are closely related to their lives

*Associate Professor (Research Scholar) Principal, Nirmala Institute of Education, Altinho Panaji Goa

**GVM's Dr. Dada Vaidya College of Education Ponda, Goa


Dr. (Miss) Delia Antao
Offg. Principal
Nirmala Institute of Education
Altinho Panaji Goa

Effect of Role Playing on Academic Achievement of Secondary School Students of Goa in the Post –Covid Era

Mrs Sharmila V. Kerkar*, Jojen Mathew **

Abstract

Today's world is full of competitions. In the school a greater emphasis is placed on the academic - achievement of the students. From the last two years the COVID-19 has brought a lot of stress and negative impact on the students mind. Terms like Lockdown, Social distancing and quarantine have created a fear and stress in their mind. There is constant fear of being infected with the virus amongst the school going students. This have raised the Stress rate of anxiety and depression. Many Students have been mentally impacted by COVID-19. All these problems have brought down the academic achievement of students in many subjects and at all stages of education. To reduce the stress and to create interest in studies so that their performance can improve, teachers can make use of Role –Playing. The present study shows the positive impact of the Role-Playing technique on academic achievement of the students in comparison to the normal lecture method. Effectiveness of Role–Playing as a better technique have been proved by Pre-Test and Post –Test technique in experimental and control group. Government of Goa in collaboration with SCERT and Teacher Training Colleges should conduct workshops to train school teachers all over Goa to utilize Role-Playing for effective teaching and learning in the classrooms as the students are still stressed even in Post-COVID era.

Key Words: Academic -achievement, COVID-19, Role –Playing . Lecture,Pre-test, Post –test.

Introduction

Today's world is full of competitions. In each and every field quality of performance has become the key

factor for personal progress. In the school a greater emphasis is placed on the academic achievement of the students. It is being given importance

* Assistant Professor : Nirmala Institute of Education Altinho, Panaji- Goa, Mo. 7030033302, Email: sharmilakandolkar10@gmail.com

**Associate Professor: Dr. Dada Vaidya College of education, Farmagudi, Ponda –Goa.

Re-Inventing the Academic Libraries of Higher Education

-; Edited By :-

SHRI. BALA K. MANDREKAR

MRS. NIRMALA U. PARAB

DR. KESHAV R. DHURI

GOA COLLEGE LIBRARIANS' ASSOCIATION
(GCLA)

PANAJI- GOA

2019


Dr. (Miss) Delia Antao
Offg. Principal
Nirmala Institute of Education
Allinba, Panaji, Goa

WHY YOU NEED TO UNDERSTAND THE IMPORTANCE OF SOCIAL MEDIA

Dr. Maya Carvalho e Rodrigues

College Librarian
Nirmala Institute of Education,
Altinho Panaji Goa

ABSTRACT

Social network is a programme to share, build and make connection with the likeminded people or people having similar interests. The recognition and prominent trends of social networking is being used as a tool in every domain of life. In all fields of work there is a bit of social network applications. Library and information service is using the different forms of social networking to maximize its effect and influence of services. Social network has created a new platform for library and information professionals to provide library services in a successful and in an unprecedented way. Libraries in India have been challenged like never before to become more enterprising and energetic and more value added services to meet the ever changing needs of our faculty, students and research scholars.

Keywords: Social Network; Academic Libraries; Social Media; Modern Technologies and Marketing

INTRODUCTION

The digital era has expanded the accountability and role of Librarians to provide a wide range of resources to users and services that extend beyond the physical walls of the Library. Today's librarians in the global information environment is doing more than

Librarians can deliver various library services such as providing resources to support learning, cultural development and making available list of materials using social media like blog, WhatsApp, Twitter, Facebook, YouTube and LinkedIn. These programme through their distinctive features like

Dr. (Miss) Della Anton
Offg. Principal
Nirmala Institute of Education
Altinho, Panaji

International Conference on
**KNOWLEDGE ORGANISATION
IN ACADEMIC LIBRARIES**

(I-KOAL 2019)

Building Smart Libraries: Challenges and Discovery Tools

Editors

Salek Chand

Dr. Rama Nand Malviya

Dr Shishir H Mandalia

Dr. Nimesh D. Oza

2019

Antar

Dr. (Miss) Della Antar
Offg. Principal
Nirmala Institute of Education
Alindoo, Panaji, Goa

PARSHVA PUBLICATION : AHMEDABAD

KNOWLEDGE MANAGEMENT IN ACADEMIC LIBRARIES. THE NEED OF THE HOUR

Dr. Maya Carvalho Rodrigues

College Librarian, Nirmala Institute of Education, Altinho Panaji Goa

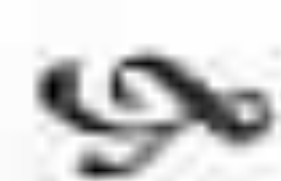
ABSTRACT

Knowledge Management augments and boost productivity, usefulness and efficiency in the operations and services. Academic libraries are information centres established in support of the mission of their parent institutions to generate knowledge. To prove their suitability in the academic libraries a librarian must aim to provide the right amount of information to the right academic community at the right time with a right expense of financial and human resources. With static or dwindling library budget, academic libraries have to increase their functional efficiency in order to meet the challenge of the increasing information. Knowledge management is the only means by which an academic library could improve their services in the present knowledge era. The aim of any academic library is to maintain a relationship between library and the user.

INTRODUCTION

Knowledge management (KM) entail that the objectives and blue print of an organisation, and it necessitates the management of knowledge that is useful for some purpose for the academic libraries. Knowledge management is brought about successfully and relevant means in which academic libraries could improve their services. This can be executed through creating an organisational culture of sharing knowledge and competence within the library. Academic libraries face many arousing interest in stimulating and managing knowledge. This challenges arise because only a part of knowledge is assimilated by the academic libraries, the other is internalised by individuals. The aim of knowledge management in libraries is to promote relationship between libraries; and the student and faculty and to accelerate the knowledge flow. In the knowledge economy libraries are allocate with an uphill task of helping out researches on development and application of information resources, drawing assumptions from digital libraries, protection of intellectual property rights in the electronic era and defining the way for knowledge modification.

The use of information technology in knowledge management is that one can improve the ability of communication between librarians and users. This will be important in saving the time and improving services. Information technology can be used in the collection, classification, storage, delivery, and preparation of data between devices, people, and organizations through multi-media within the library. Information and communication technologies (ICT) can also provide more flexibility in dealing with the information and data through databases



CONTENTS OF PART - I



S. No.	Title & Author	Page No.
1	Theory and Practice (Shastra and Sampradaya) of Indian Classical Dance and its Incorporation in Modern Curriculum of Education Aditi Venkatesh Naik	1-7
2	Art as an Agent of Social Transformation Dr. Shilpa D. Parab	8-13
3	Blended Learning in Physics: The New Trend in Teaching Learning Process Pooja R. Bhosle	14-19
4	Blended Learning: An Innovative Curriculum Transaction Mode for Quality Teacher Education Dr. Sonkamble C. P. Ms. Viyanna Cabral	20-25
5	Blended Learning, A Welcome Shift from the Traditional Teaching Learning Process Novelty Volvaikar e Morjekar	26-34
6	Strategies to Overcome Challenges Posed by the Internationalization of Higher Education Dr. Christina De Souza	35-42
7	Teachers: Instruments of Building Trust and Credibility in Work Culture Dr. Delia Antao	43-49
8	Developing Research Culture in Higher Education Institutions Ganesh Chandra Naik	50-57
9	Massive Online Open Courses (MOOCs) and Indian Higher Education Dr. Dineshan Koovakkai	58-64
10	Life Skills Education - A Must? Disha Ramnathkar Dr. Vidya Vinutha Dsouza	65-71
11	Ecofeminism: Building Bridges, Bridging the Gaps Dr. Bharati P. Falari	72-79


Dr. (Miss) Delia Antao
Offg. Principal
Nirmala Institute of Education
Altinho, Panaji, Goa

Teachers: Instruments of Building Trust and Credibility in Work Culture

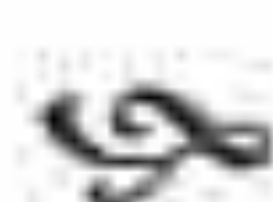
Dr. Delia Antao

Officiating Principal, Nirmala Institute of Education, Altinho Panaji Goa.

the desire of every individual to give creative expression to the potential that lies in our being. Work is one of the forms of that expression that provides a platform and space for applying our knowledge, learning and understanding, and for utilizing space and resources to exercise our problem solving methods. Modern technology and a multitude of tools available at our disposal can trigger off our creative imagination, inspire innovation, discovery, undertake complex computation or simply work at steady algorithms, in or reports to achieve our goals. However, optimising our capacities and abilities only in an atmosphere of trust and confidence. Trust is built on credibility and requires vital attributes such as sincerity, loyalty, commitment, accountability, responsibility, fairness, gratitude and an attitude of respect for self and others. It is the scaffolding that supports trust and confidence. It is the integral part of the lives of young minds, the responsibility for which rests on every citizen. Every significant citizen is expected to be a role model for those in their care. This is in particular is the duty, vocation and responsibility of every teacher, and the objective of every educational institute in the country is aligned with the educational objectives spelt out in the National Curriculum Framework defined in the Constitution of India. This ensures that every citizen is called to display trust and credibility in their culture of work.

Words: Trust, credibility, character, optimising abilities, role models,

in a world of love can we unfold and bloom! Life abounds where trust is sown. The highest performers in any field are persons who are able to find high levels of trust in their workplace. According to Stephen R. Covey, *trust is the highest form of human interaction which brings out the very best in people*. He goes on to say that *the ability to*

**CONTENTS OF PART - I**

S. No.	Title & Author	Page No.
12	Employability Skills in Commerce Education: A Review Dr. Shami R. Pai	80-88
13	Life Skills - An Imperative in Higher Education Ms. Maria Eutemia Fernandes	89-95
14	Google Generation Students and Libraries: Challenges of Librarian Has the Library Outlived its Usefulness in the age of Internet? Mrs. Sonia Mukesh Desai	96-106
15	Integration of Life Skills in Higher Education Mr. Subodh S. Haldankar	107-111
16	Applications of Internet of Things (IOT) in Creating Student - Centric Learning Environment (For the sub-theme: Technology as a Support for Learning) Ms. Pooja Bidye	112-118
17	The Changing Role of Librarian and Libraries in Digital Age Dr. Keshav R. Dhuri	119-128
18	Leadership Competencies for Academic Librarianship in the Digital Era Mr. Paritosh D. Pawar	129-137
19	Integration of Life Skills in Higher Education Sangeeta R. Kadam	138-144
20	Life Skills - Necessity in the Curriculum of Post Graduates Dr. Vidya Vinutha Dsouza	145-150

13. Life Skills - An Imperative in Higher Education

Ms. Maria Eutemia Fernandes

Assistant Professor in Education, Nirmala Institute of Education.

Abstract

In India one of the most important goals of higher education, besides knowledge is to promote life skills. Most of the stakeholders in Higher Education, are adolescents. Adolescence is a stage which is described as a critical period of life with many changes which include biological, cognitive and social. Besides, these changes which are rapid, the adolescence is described as "a period of storm and stress" (Stanley Hall) Our youth will be future leaders and should therefore be shining examples of well-balanced personalities equipped with good leadership skills and therefore should be trained in life skills during their higher education. Life skills have been defined as "the abilities for adaptive and positive behavior that enable individuals to deal effectively with the demands and challenges of everyday life" (WHO). Life skills can be grouped into three categories: Thinking Skills, Social Skills and Emotional Skills. Thinking Skills include creative thinking, critical thinking, problem solving and decision making. Communication Skills, interpersonal Skills and empathy can be categorized under Social Skills, whereas self-awareness, management of emotions and management of stress can be grouped under Emotional Skills. In India we need to focus on the goal of promoting Life Skills in Higher Education by training our youth in the development of life skills. It will not only give an impetus to the generation of employment but will go a long way in meeting India's aspirations of emerging as a major player in the global knowledge economy.

Key words: Life skills, Higher Education, Adolescence, Adaptive, Global Economy.

Introduction

The main objective of this paper is to provide a rationale for the promotion of Life-Skills in Adolescents as they pursue higher Education in India. In doing so, I have also tried to suggest a few methods in order to develop some life skills in students.

Dr. (Miss) Della Antao
Offg. Principal
Nirmala Institute of Education
Allinho, Panaji, Goa

15. Integration of Life Skills in Higher Education

Mr. Subodh S. Haldankar

Assistant Professor, Nirmala Institute of Education, Atinho, Panaji - Goa.

Abstract

The youth of a nation shapes the destiny of the nation and higher education plays a crucial role in the life of the youth. Today's youth is under constant pressure of living up to the expectations of the society. There are numerous challenges which try to hog down their confidence. The ever-evolving and rapidly changing world is choking them. They can lose the battle if a helping hand is not offered to them. Integrating Life Skills in Higher Education ensures that the youth develops the psychological abilities to become more adaptive and exhibit positive behaviour. It offers them the opportunity to become more resilient and determined. They develop the indomitable spirit to face the world with a smiling face and loads of optimism.

In the present paper, the researcher has attempted to explore the effect of integrating life skills in higher education on the youth of the nation.

Keywords: Life Skills, Higher Education, Life Skills Education

Introduction

The youth are the pillars of a society. They shape the destiny of a nation. The society thrives on their successes and struggles to survive when they fail. They are the makers or breakers of a country. If nurtured well, they have the power and potential to take a country to dizzying heights and ensure abundance and prosperity for all the citizens.

Higher Education plays a crucial role in the life of youth. The stage at which the students enter higher education is one of the most delicate stages of development in their lives. This stage decides whether the students will climb the ladder of success and in turn help the society or they will enter the rat-race to seek personal gains. In other words, Higher Education has a huge responsibility of deciding the fate of a country by moulding the young minds and inculcating the right attitude in them. The psyche and the energy of the youth can be channelized in the right direction by providing Life Skills Education at this critical juncture of their lives. According to Dr (Smt) Jyoti S.Kawalekar, integration life skills in Higher Education will help learners to know


Dr. (Miss) Della Antao
Offg. Principal

Nirmala Institute of Education
Atinho, Panaji, Goa

19. Integration of Life Skills in Higher Education

Sangeeta R. Kadam

Assistant professor, Nirmala Institute of Education, Altinho- Panaji, Goa.

Abstract

In an ever-growing technology and data driven world, much of the focus in education has understandably taken a shift toward STEM-based (Science, Technology, Engineering, and Mathematics) initiatives that will prepare students for the coursework and careers of the future. But life skills—how well equipped students are to make good decisions and solve problems in their academic and professional careers as well as their personal lives—should also play a critical role in a well-rounded and comprehensive education. Life Skills Education is a value added programme which aims to provide students with strategies to make healthy choices that contribute to a meaningful life. Integrating life skills in higher education will help deal with challenges effectively in one's personal life. More importantly, education experts believe that such skills, when instilled in learners, are used to boost their educational qualifications. Life skills are a comprehensive set of universal cognitive and non-cognitive skills and abilities, connecting behaviour. Attitudes and knowledge which youth can develop and retain throughout their lives. Life skills increase young people's well-being and help them to develop into active and productive members of their communities.

Key words: Life skills, adolescents, psychosocial, environment, youth.

Introduction

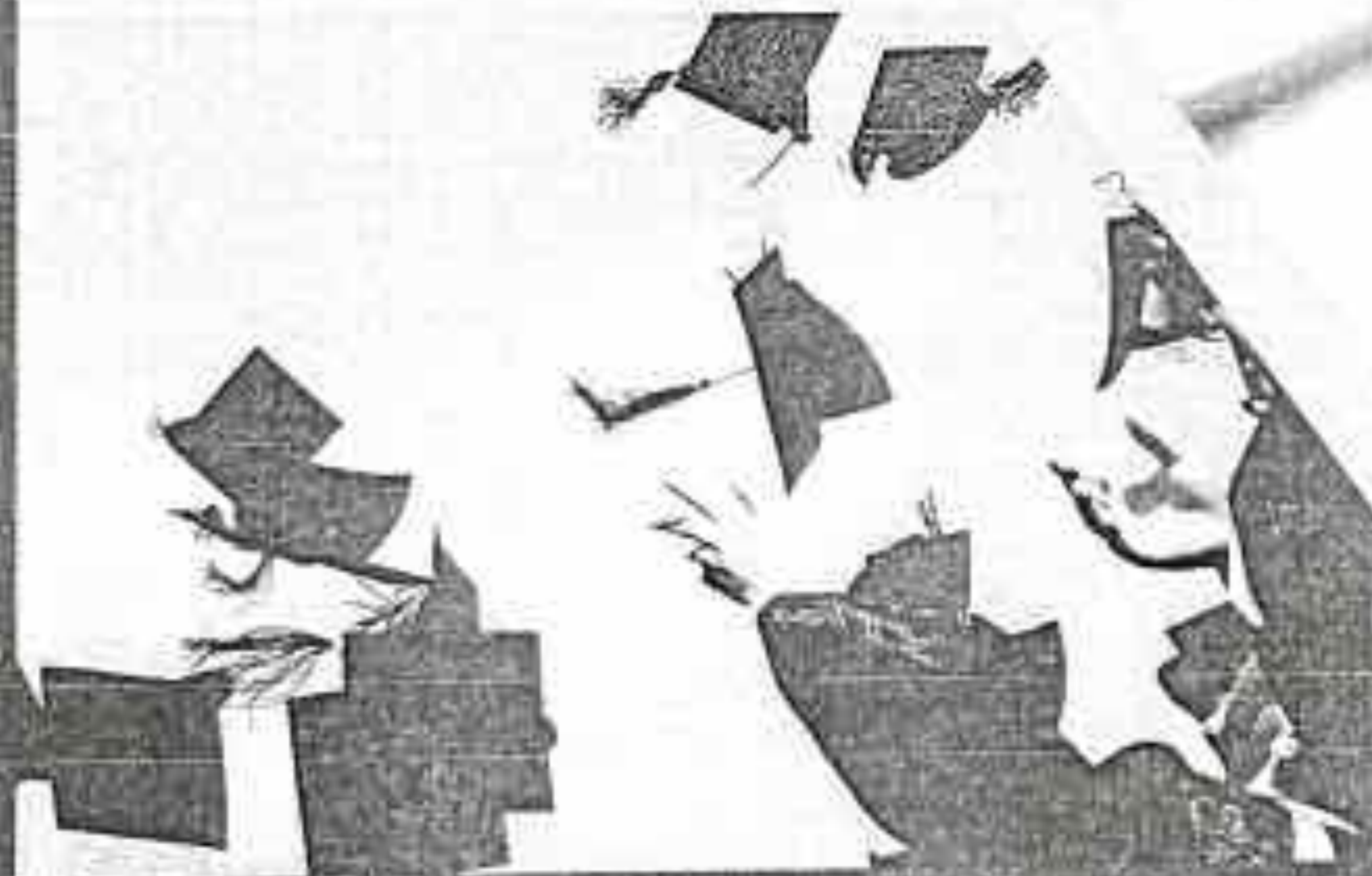
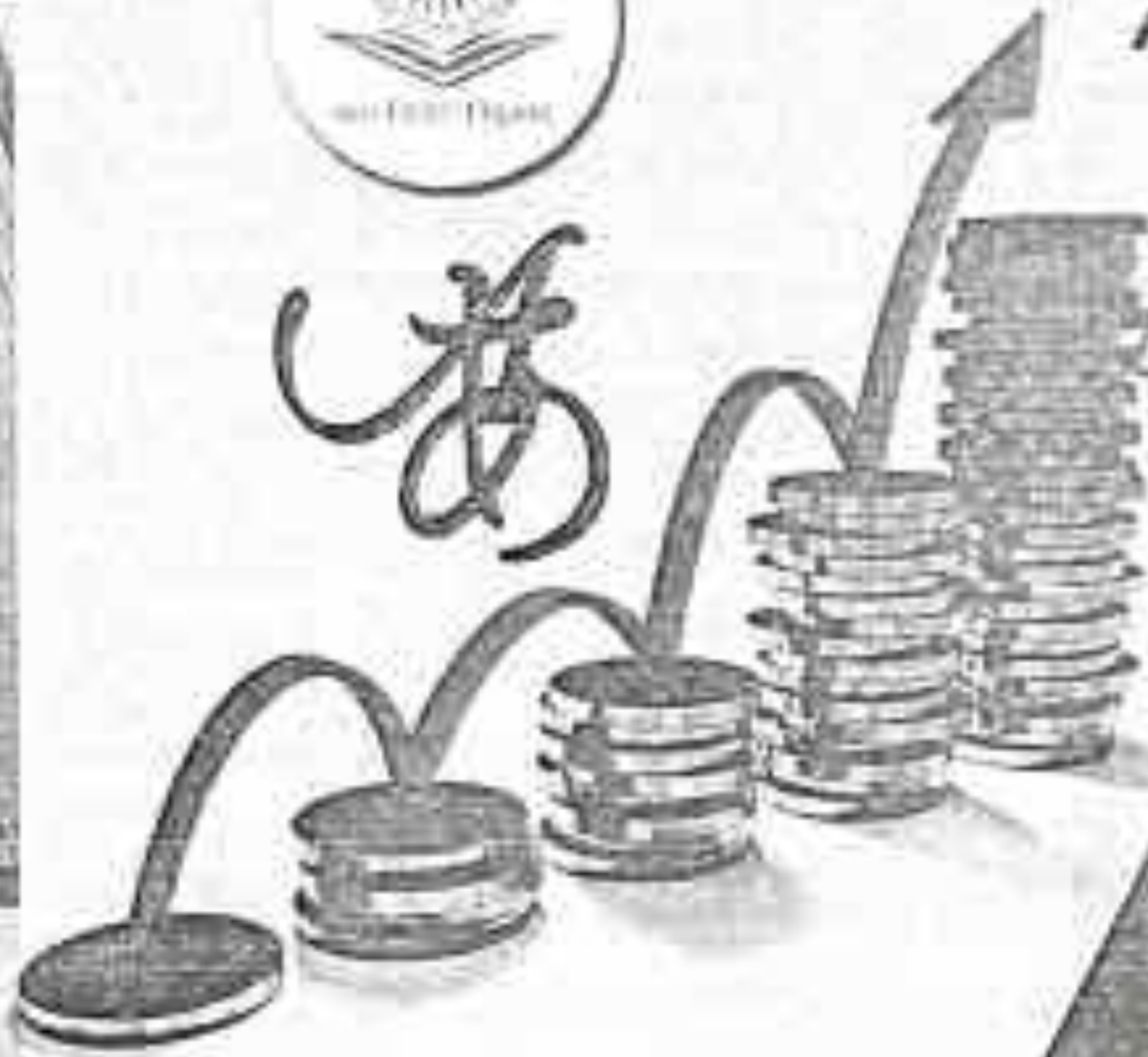
Today we generally observe more nuclear families than joint families. The responsibility of the family is decreasing in the development of the child. At the same time the precious work is going into the hands of school teachers. In real life every student undergoes mental stress. In the 21st century the duty of teacher has changed entirely. Young people as advocates need both thinking and social skills for harmony building and promotion on issues of concern. The role of a teacher here is to provide ample opportunities and situations to the students so that they can acquire, process and structure these. Life without education is a life without opportunity. Today, teachers' duty is not only filling the student with existing knowledge but also providing the skills which a child needs to exist on the earth. Hence each and every teacher must possess the

Peer Reviewed Referred
and UGC Listed Journal
(Journal No. 40776)



ISSN 2277 - 5730
AN INTERNATIONAL MULTIDISCIPLINARY
QUARTERLY RESEARCH JOURNAL

AJANTA



Dr. (Miss) *Ajanta*
Off. Princip
Nirma Institute of Edu
Mandla, Panaji, Goa

**Ajanta
Prakashan**

Volume-VIII, Issue-I
January - March - 2019
Part-II

Impact Factor / Indexing
2018 - 5.5
www.sjifactor.com

**CONTENTS OF PART - II**

S. No.	Title & Author	Page No.
1	Endorsing Value Orientation in Higher Education Dr. Mahesh Pai	1-8
2	Is Information Inherently Difficult to Market? Dr. Maya Carvalho e Rodrigues	9-18
3	Metacognitive Level of B.Ed. Teacher Trainees: A Study Pratiksha Chandrakant Shirodkar	19-28
4	Green Entrepreneurs and Sustainable Development in India: Opportunities Rajidi Rammohan Reddy	29-41
5	Life Skills in Higher Education: A Catalyst to Enhance Employability among Graduates Reema Kanekar	42-49
6	The Role Technology Can Play in Transforming the Educational Learning Process Rishabh Kolvenkar	50-57
7	Creating an Interactive Virtual Wall through Padlets Dr. Russell D'Souza	58-68
8	Integrating ICT in Social Science Pedagogy Mrs. Sharmila Vilas Kerkar	69-79
9	Technology as a Support for Learning Sri. Shivaprakash K. M.	80-89
10	Six Sigma An Overview and its Application in the Library to Understand User Satisfaction: A Case Study of AITD Central Library Novelty Volvaikar E Morjekar	90-98
11	The Relevance of Social Justice in the Present Context of Indian Constitution Mr. Vijay M. Gawas	99-111
12	Value Education: The Key to Being Human Suvarna P. Gauns	112-118

Antao
 Dr. (Miss) Delia Antao
 Offg. Principal
 Nirjala Institute of Education
 Alibho, Panaji, Goa

2. Is Information Inherently Difficult to Market?

Dr. Maya Carvalho e Rodrigues

College Librarian, Nirmala Institute of Education, Altinho Panaji Goa.

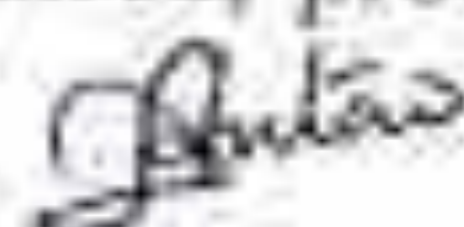
Abstract

Academic libraries have all type of collections. To assist and encourage the collection in the it is necessary to market the academic library. The goal of the academic libraries is user satisfaction. Academic libraries support the affiliated educational institutions which play a important role by providing them with the required library and information services to support academic activities, and their contributions in the development of their institutions inadequate support from the parent institution, inadequate staff to provide the necessary services with professionalism among others. Librarianship is experiencing rapid change. Information technology has created a new gateway for information services. Information products and services in abundance of formats have made libraries and information centres more competitive and alert.

Introduction

Libraries are considered as treasures and as a storehouse of knowledge. It has been observed that all libraries are full of reading material which consist books, journals, films, images, manuscripts, Audio visual materials etc. which has knowledge, recorded by people, writers and personalities. Preservation of this knowledge is a prime task of all libraries and Information Centres; however there is a need to market these resources. With the help of Information technology many libraries and information centres has their own websites on which all kind of information is accessible with its bibliographic details and mechanism to encourage and marketing of services

As librarians, we unknowingly engage in marketing of library services. The main objective of the academic library is to attain self-sufficiency in their resources and to provide an optimum level of services in order to reach more potential library users and also to encourage the use of library information resources. This major objective of a library requires a shift from product or service oriented approach to a customer or need oriented approach. The satisfaction of the library users, who are the consumers of information resources that are acquired, processed,



Dr. (Miss) Delta Anwar
Offg. Principal
Nirmala Institute of Education
Altinho, Panaji, Goa

3. Metacognitive Level of B.Ed. Teacher Trainees: A Study

Pratiksha Chandrakant Shirodkar

Assistant Professor, Nirjala Institute of Education, Altinho, Panaji-Goa.

Abstract

Metacognition means "thinking about one's own thinking. Metacognitive knowledge-awareness of one's thinking and metacognitive regulation the ability to manage one's own thinking processes are the two aspects of metacognition. Metacognitive awareness means being aware of how you think. Metacognition is the awareness of one's thinking and the strategies one is using. The researcher in this paper is trying to analyze the metacognitive level of B.Ed. teacher trainees. A standardized inventory was used to check the metacognitive level. The study tries to find out whether there exists any significant difference in metacognitive level w.r.t. locality, qualification and Birth order. Mean, Standard deviation and t test was used for knowing the differences in metacognitive ability of the teacher trainees. The results revealed that there exists no significant difference the variables and the metacognitive level.

Key words: Metacognition, B.Ed. Teacher Trainees.

Introduction

Metacognition is defined as the knowledge and regulation of one's own cognitive processes. Metacognition plays a critical role in successful learning. Good learners show high degree of metacognition. Metacognitive practices increase students' abilities to transfer or adapt their learning to new contexts and tasks. Metacognition is most commonly divided into two distinct, but interrelated areas. John Flavell, one of the first researchers in metacognition and memory, defined these two areas as metacognitive knowledge- awareness of one's thinking and metacognitive regulation the ability to manage one's own thinking processes..

Flavell(1979) describes three kinds of metacognitive knowledge:

- Awareness of knowledge- it involves understanding what one knows, what one does not know, and what one wants to know. This category may also include an awareness of other's knowledge.
- Awareness of thinking- understanding cognitive tasks and the nature of what is required to complete them.

7. Creating an Interactive Virtual Wall through Padlets

Dr. Russell D'Souza

Assistant Professor, Nirmala Institute of Education, Panaji - Goa.

Abstract

The 21st Century teacher is required to augment and connect learning via innovative digital methodologies as digital technology can excite learners and even provide an engaging alternative vis-à-vis the conventional methodologies. Padlets a Web 2.0 tool popularly known as a Virtual Wall can facilitate active learning by allowing learners not only to interact with the content but also interact with peers through a variety of presentation formats. Training a 21st century teacher trainee to construct Padlets and examine its worth in the wholistic teaching and learning endeavor is the focus of the present paper.

Introduction

The 21st century learner is tech-friendly and can maneuver the world of technology he/she uses. This tells educators that learners connect differently, they do things differently, they learn differently, they entertain themselves using various technologies and may even learn/study through technology. On the other hand some research evidences, for instance; studies by Veira, Leacock & Warrican, (2014) and Osgerby & Rush, (2015) show that in many situations, students were reluctant to use ICTs to interact with each other and furthermore showed reservation about mixing academic and social spheres. All in all, the new-gen learner does possess group skills such as ability to collaborate, communicate ideas thereby remaining active and competitive.

Traditional learning sometimes defined as "teaching by telling" (Bonwell & Eison, 1991) or "exposition-centered" (Freeman et al., 2014) freezes an already overburdened learner's faculties thereby further inactivating them. Would such learning excite a learner who we believe, we are preparing to survive in the 21st century? Obviously not. Research evidences describe such a classroom as laid-back. Active learning is connected with a constructivist course design, inquiry-based teaching, collaborative activities, and technology-enabled activities (Ruiz-Primo et al., 2011).


Dr. (Miss) Della Antao
Offg. Principal

Nirmala Institute of Education
Altinho, Panaji, Goa

8. Integrating ICT in Social Science Pedagogy

Mrs. Sharmila Vilas Kerkar

Assistant Professor, Nirmala Institute of Education, Altinho, Panaji - Goa.

Abstract

Information and Communication Technology (ICT) provides teachers and students with immediate access to up-to date information and highly interconnected world. It is a dynamic medium which when used appropriately can deepen the knowledge of Social Science subject and understanding as never before. Integrating Information and Communication Technology into teaching pedagogy and the curriculum is increasingly becoming an inseparable part of teaching. Teaching profession is being redefined as a result of this integration process. When effectively integrated in the classroom, ICT is believed to provide teachers with the appropriate tools, resources and context to improve students' abilities to become active learners and prepares them to transfer what they have learned to new problems and contexts. ICT has created new ways of exploring the world through Google Maps, they are easily accessible and can be integrated into teaching learning process. Multimedia software can help students to investigate information on many topics of the Social Science subject which are too remote and too dangerous. The Internet and the E-mails enables the teachers and the students to interact with peers and other communities, to access and research information and exchange details of weather environment and culture. This brings inaccessible localities into the classroom. This in turn can help to develop global citizenship and awareness of the sameness and diversity in the cultures of the world. ICT offers students opportunity to work in role, engage with 'real time' situations which promote teamwork, citizenship and thinking skills. As teaching and research goes together the role of ICT in research also need to be explored. It serves as an effective tool for collecting, storing and analysing of data.

Introduction

Information and Communication Technology is influencing the way we communicate, learn and live. It has become a medium of people and has played a pivotal role in almost every aspect of our lives. Therefore "UNESCO considers that ICTs can contribute to universal access to education, equity in education, the delivery of quality learning and teaching, teachers'

12. Value Education: The Key to Being Human

Suvarna P. Gauns

Associate Professor, Nirmala Institute of Education.

Abstract

India is known for its rich culture. It has a glorious past but at present this country is passing through a period of crisis, where there is degradation of moral standards. The common observation is that, there is widespread corruption at all levels, lowering of the tolerance level in the society, violence is creeping in the form of communal and ethnic conflicts, caste-wars, harassment of the weaker sections of the society, etc. Today we need to pray to God saying that "guide us to move away from the present reality of the corrupt society into an entirely Human society. Why? Because a strong need is felt for the inculcation of values in today's society. This paper is the outcome based on the analysis of the students' responses to a set of questions based on values as well as some personal experiences during interaction with B.Ed. teacher trainees and school students too.

Key Words: Value Education, Teachers' role.

Introduction

The most precious asset possessed by us is our glorious past of ancient culture which is firmly founded on the principles of 'Sanatana Dharma'. In this connection one could recall the prayer:

Let all be happy

Let all be healthy

Let all be gentle

Let none have sorrow

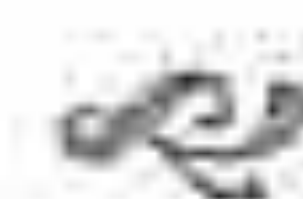
But do we pray like this? For this we need education which will teach the following to us:

- How to live life well?
- How to find Happiness?
- How to make others happy?
- How to manage all kinds of people and happenings well?
- How to grow and succeed in the right manner?


Dr. (Miss) Della Anilaw
Offg. Principal
Nirmala Institute of Education
Bhubaneswar, Odisha, India



CONTENTS OF PART - II



S. No.	Title & Author	Page No.
13	Technology Enabled Library Services at Goa State Central Library: An Overview Dr. Carlos M. Fernandes	119-123
14	Technology: A Key to Enhanced Learning in Education Introduction Carlton Fernandes Gawkhare Mahesh Shankar Hublikar	124-131
15	Tiatr: An Effective Medium of Transforming the Society by Creating Awareness Saish Deshpande	132-138
16	Study of Users Satisfaction with Library Resources and Services: A Case Study of Narayan Zantye College of Commerce Library, Goa Shri. Bala Mandrekar	139-145
17	Trust and Credibility in Work Culture Maria Ximena Fonseca	146-154
18	हिंदी फिल्मों के आरम्भिक दौर में पुस्तकालयों का चित्रण डॉ. अनिल कुमार घीमान सचिन कुमार कौशिक	155-167
19	सामाजिक परिवर्तनाला चालना देणारे संगीत नाटक - सं. शारदा सी. अनघा देशपांडे	168-174
20	शिक्षण प्रशिक्षण महाविद्यालयों में "भाषा शिक्षण में निदानात्मक शिक्षण एवं उपचारात्मक प्रक्रिया श्रीमती करुणा राजन सातार्डेकर	175-177

Dr. (Miss) Della Antao
Offg. Principal
Nirmala Institute of Education
Altinho, Panaji, Goa

17. Trust and Credibility in Work Culture

Maria Ximena Fonseca

Associate Professor, Nirmala Institute of Education, Altinho, Panjim.

Abstract

Trust is absolutely necessary in order to establish not only the leader's reputation, but also a strong network of people who will help the leader throughout his/her career. It goes without saying: No one person is responsible for the success of a company; it's a team effort. Credibility on the other hand involves transparency, trustworthiness, and moral predictability. Both these are essential qualities that help to build a great workplace. A leader can build trust at the workplace by giving co-workers praise when it's due, avoid office gossip, share information with peers, trust others, invest in employees' development, and welcome new employees graciously. Some of the benefits of building trust are increased productivity, improved morale and the ability to work effectively as a team. Factors that can be considered in building and maintaining a credible culture at the workplace are having empathy, being others oriented, responsive, accessible, competent and establishing a culture of open dialogue. There's much more to the psychology of creating credibility, but it can be boiled down to this: Employees and followers will watch the leader, and look for the degree to which the leader behaves in ways consistent with his or her expressed values. The credibility of leadership is what determines whether people will want to give a little more of their time, talent, energy, experience, intelligence, creativity, and support. Only high credibility earns intense commitment. And commitment will ultimately enable people to regenerate great businesses, communities, and economies.

Key words: trust, credibility, workplace, leader, employee

*"A great place to work is one in which you trust the people you work for, have pride in what you do, and enjoy the people you work with." Robert Levering
Co-Founder, Great Place to Work®*

What's at the core of any professional relationship? One word: trust. It's absolutely necessary in order to establish not only the leader's reputation, but also a strong network of people who will help the leader throughout his/her career. It goes without saying: No one person

१९. सामाजिक परिवर्तनाला चालना देणारे संगीत नाटक - सं. शारदा

सौ. अनघा देशपांडे

सहाय्यक प्राध्यापक, प्रायोगिक कला निर्मला इन्स्टिट्यूट ऑफ एज्युकेशन, पणजी - गोवा.

इ. स. पूर्व ग्रीक रंगभूमी किंवा इ. स. पूर्वीच्या अभिजात संस्कृत रंगभूमीपासून आजतागायतचा रंगभूमीचा इतिहास लक्षात घेता 'नाटक' आणि 'समाज' यांचं नातं नेहमी 'सामाजिक घटनांचं नाटकात प्रतिबिंब आणि नाटकीय घटनांचा समाज मनावर होणारा परिणाम' अशा तऱ्हेने एकमेकांना पुरक आहे.

लोकनाट्य, अभिजात नाटक, पारंपारिक नाट्य, वास्तववादी नाटक, प्रायोगिक नाटक आणि मुक्त नाट्य अशा तऱ्हेने आपण समग्र जागतिक रंगभूमीवरील नाटकांचे ढोबळ वर्गीकरण करू शकतो. पैकी वास्तववादी नाटकात सामाजिक वास्तव प्रकटपणे दाखविता येते, प्रायोगिक नाटकात सामाजिक चौकट मोडून जटिल समस्यांना रंगंचीय अवकाशात अपारंपारीक पद्धतीने मांडले जाते. मुक्त नाट्यात सरळ सरळ सामाजिक प्रश्न उचलून त्यावर भाष्यही करता येते. रस्तानाट्य हा देखिल त्यातीलच एक प्रकार. तुलनेने लोकनाट्य, अभिजात नाटक आणि पारंपारिक नाट्य हे साचेबद्ध आणि विशिष्ट शैलीशी बांधिल असल्यामुळे सामाजिक प्रश्नाशी प्रगट भिडताना कमीच दिसतात. महाराष्ट्रातील 'संगीत नाटक नाट्यपरंपरेचा विचार करता मात्र संगीत नाट्यसंहिता प्रेक्षकांच्या अभिरुचीशी संलग्न असल्याने रसिकमनात घर करून राहिल्या. मग त्या पुराणकथा असोत, काल्पनिक असोत, ऐतिहासिक असोत वा सामाजिक असोत! १८४३ पासून आजतागायत संगीत नाट्यपरंपरेत वेगवेगळ्या विषयांवर आधारित नाट्य प्रस्तुति होत आल्या आहेत. कथेतील वैशिष्ट्य आणि पदांच्या चालीची विविधता यामुळे जनमानसावर प्रभाव पडत आलेला आहे. आणि अजूनही पडतो.

नाट्यकृतिद्वारे सामाजिक परिवर्तन करणे म्हणजे सामाजिक चेतना जागृत करणार्या, सर्वांसाठी लाभदायक अशा संकल्पनेचे परिष्करण करून तिचा स्वीकार आणि प्रचार करणे।

हे उद्दिष्ट प्रामुख्याने साध्य करणार्या संगीत रंगभूमीशी निगडित एका कलाकृतीचा परामर्श उदाहरणादाखल येथे देत आहे. गोविंद बल्लाळ देवल यांचे 'संगीत शारदा' (इ. स. १८९९) हे 'समाजपरीवर्तक' नाटक पौराणिक नसूनही आज १०० वर्षांनंतरही रसिकमनावर राज्य करीत आहे.

सूचनक शब्द -

- 1) मराठी
- 2) संगीत
- 3) रंगभूमी
- 4) शारदा
- 5) देवल

मराठी नाटकाचा प्रारंभ

विष्णुदास भाव्यांचं 'सीता स्वयंवर' हे नाटक म्हणजे मराठी रंगभूमीची मुखात मानली जाते. 'नाटक लिहून सादर करणे' हा प्रघात या नाटकामुळे पडला. महाराष्ट्रातील 'सांगली' येथे हे नाटक झालं. सांगलीचे राजे पटवर्धन यांनी कर्नाटकातील यक्षगानाच्या खेळाने प्रभावित होऊन विष्णुदास भावे यांना हे नाटक करायला सांगितलं आणि आर्थिक पाठबळही पुरवलं.

Conference Book

ISSN No-2278-5655



NAAC Re- accredited
with Grade B

Government of Maharashtra

**Shree Maharani Tarabai Government College of
Education, Kolhapur, (Maharashtra)- 416001**

One Day Interdisciplinary International Conference

On

**SKILL DEVELOPMENT IN HIGHER
EDUCATION**



2nd February, 2019

Tel No. 0231-2535043

www.amickop.com

Email: princ-amr-edko-mhgov.in

Antara
Dr. (Miss) Debra Antara
Offg. Principal
Nirmala Institute of Education
Alinhu, Panaji, Goa

Sr. No.	Title Name	Author Name	Page No
44	Role of IQAC in Maintaining Quality Standards in Higher Education	Sunayana Jotiram Jadhav	174
45	Role of Mass Media in Developing Soft Skills and Body Language among Degree Students of Rural Area: A Survey Study in ELT	Tukaram R. Haggunde & Dr. D.N. More	178
46	उच्च शिक्षणातील समस्या: एक आकलन	प्रा. डॉ. उमेश शेकडे	182
47	The importance Of Soft Skills In Higher Education	Vijaymala V. Chougule	185
48	Co-relation between Skill Development and Inclusive Education'	Kamalakar Baburao Gaikwad & Dr. Sandip Prabhakar Khedkar	189
49	Role Of ICT In Legal Education	Dr Chandrani Shashikant Bagadi	193
50	The Role & Impact Of ICT In Improving The Quality Of Education	Prashant G. Kumdale	196
51	Skill Development As A Challenge In Higher Education In 21 st Century	Dr. Jadhav Bhika Lal	198
52	Skill Development in 21 st Century	Jagdish Ganpati Kumbhar	202
53	ICT For Teacher Education Programme	Dr. Sharad R. Inamwale	205
54	Challenges And Opportunities For Skill Development In Higher Education	Dr Manjunath Bhat	208
55	Role of Skill Development in Higher Education	Dr. M.S. Patil & Dr. H. Y. Kamble	210
56	Leadership Skills for Librarians	Mrs. Sandhya Girish Yadav	214
57	Skill Development in 21 st Century	Dr. Nafisa Roopawalla	218
58	Women's Empowerment Through Skill Development	Dr. Smt. Desai M.B.	222
59	कौशल्य विकास शिक्षणाची गरज	प्रा. डॉ. रेखा रामनाथ बने	226
60	Development and Assessment of Teaching Skills in Teacher Education: A Case Study	Ganesh Chandra Naik & Jojen Mathew	228
61	A Study On The Role Of Higher Education In National Integration	Smt. Raziya Begum F Sheikh Jayaramaiah	232
62	Communication Skills Development in TEP.	Dr. Sarjerao Pandurang Chavan	236
63	Development of Life Skill in Higher Education- A Life Beyond the Classroom	Sangeeta Rajaram Kadam	239
64	Essential Soft Skills To Be Instilled In B. Ed Trainees (Apart From Teaching Skills)	Dr. Sushma A. Narasgouda	243

DEVELOPMENT OF LIFE SKILL IN HIGHER EDUCATION- A LIFE BEYOND THE CLASSROOM

Sangeeta Rajaram Kadam.

Assistant Professor,

Nirmala Institute of Education, Altinho- Panaji- Goa

Abstract:

We need life skills to teach students how to act responsibly. They have the ability and knowledge, but to be able to convert it in to appropriate actions at the need of time, students must be well aware of their responsibilities and their contribution to the society. Life skill are understood to be an effective tool for empowering the youth to, take initiative, act responsibly and take control. It is based on the assumption that when young people are able to rise above their potential, they are less likely to resort to antisocial or high-risk behaviour. Life skills enhance the abilities of the individual with the changing environment and empower him to make informed and rational choices about his future and life. Life skills include self-development, self-awareness, communication skill, interpersonal and family relationship development, job and financial skills development, decision making, cooperation, negotiation, problem solving, coping with emotions, time management, stress and anger management; many life skills are 'generic', in that they can be applied to a number of specific contexts.

Introduction:

The basic goal of the Life Skill education system is to develop a mentally and physically moderate society with agreed and suitable lifestyle and behaviours. Sometimes young youth divert their energy into more experimental activities such as smoking, drugs, fighting and breaking rules. Often parents, teachers and care givers are concerned about these changes and believe that this is due to raging hormones. Life skill education believes that early intervention and support at key moments in the lives of young people is vital. The academic world has serious doubts about where our society is going in many respects. However, the students going through higher education become the citizens who determine the nature of our society. Thus, higher education has a crucial opportunity to affect the future of our society through substantially improving the skill development of our citizens.

Life Skills:

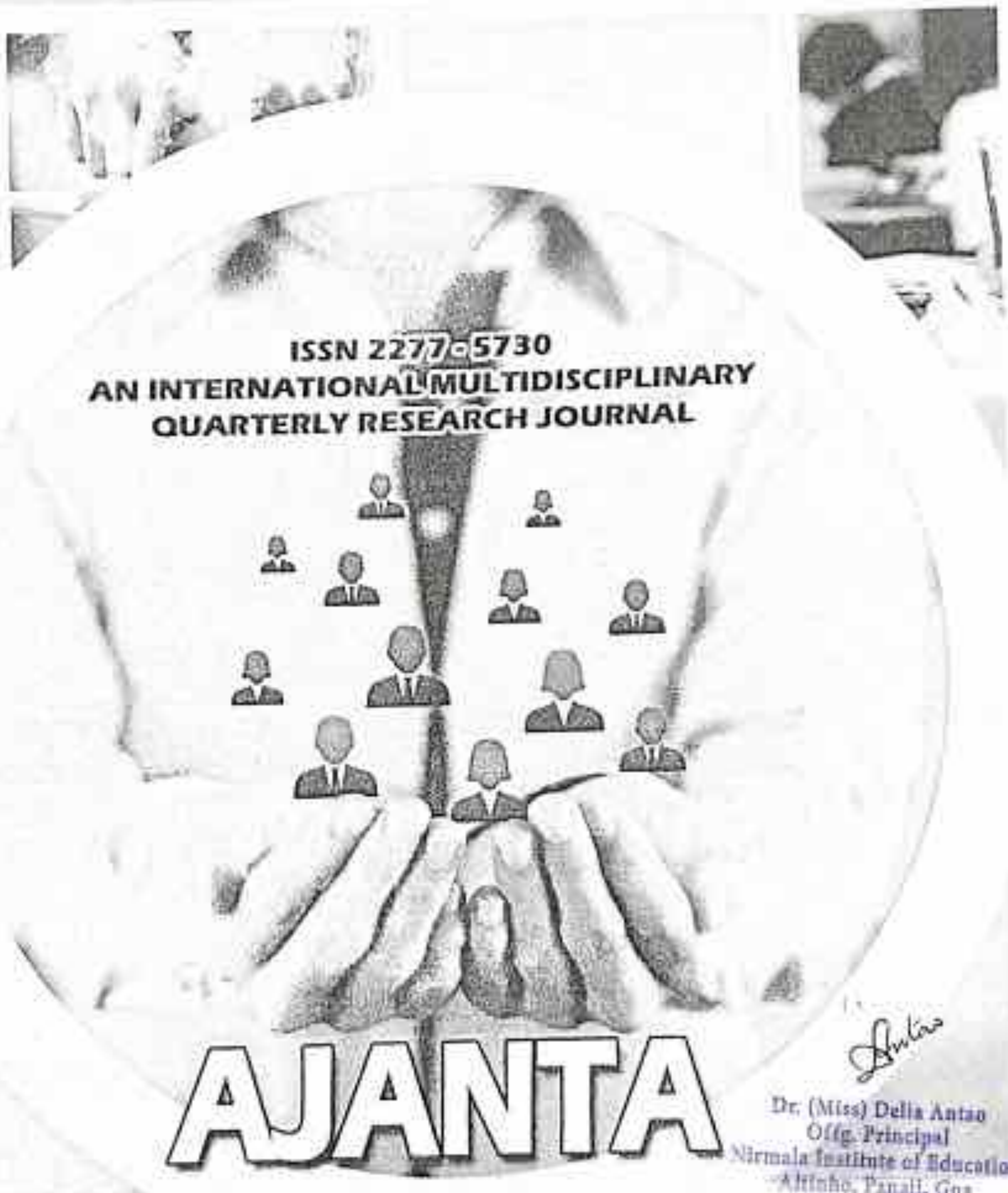
"Life Skills are abilities for adaptive and positive behavior that enable humans to deal effectively with the demands and challenges of life", as defined by WHO. This concept is also termed as psychosocial competency. This subject varies greatly depending on social norms and community expectations but skills that function for well-being and aid individuals to develop into active and productive members of their communities are considered as life skills. They are loosely grouped into three broad categories of skills: cognitive skills for analyzing and using information, personal skills for developing personal agency and managing oneself, and inter-personal skills for communicating and interacting effectively with others. The UNICEF Evaluation Office suggests that "there is no definitive list" of psychosocial skills. Nevertheless UNICEF enumerates psychosocial and interpersonal skills that are generally well-being oriented and essential alongside literacy and numeracy skills. Life skills are a product of synthesis: many skills are developed simultaneously through practice, like humor, which allows a person to feel in control of a situation and make it more manageable in perspective. It allows the person to release fears, anger, and stress and achieve a qualitative life.

The World Health Organization in 1999 identified the following core cross-cultural areas of life skills:

- **Decision-making and problem-solving:** Problem solving is related to decision making and needs many of the same skills. Decision making is an ability to analyse an issue or situations by considering all possible



Peer Reviewed Referred and
UGC Listed Journal
(Journal No. 40776)



ISSN 2277-05730
AN INTERNATIONAL MULTIDISCIPLINARY
QUARTERLY RESEARCH JOURNAL

AJANTA

Dr. (Miss) Delia Antao

Dr. (Miss) Delia Antao
Offg. Principal
Nirmala Institute of Education
-Altinho, Panaji, Goa

Volume-VIII, Issue-I
January - March - 2019

IMPACT FACTOR / INDEXING
2018 - 5.5
www.sjifactor.com



**Ajanta
Prakashan**



CONTENTS



No.	Title & Author	Page No.
	Coping and Self Esteem among Young and Adult Yoga Practitioners in Pune, India Amruta A. Kher Dr. Anand S. Godse	1-8
	Understanding Depression among the Elderly: Challenges and Issues Ridhima Shirodkar Vidya R. Balekai	9-15
	Perceived Stress and Work-Family Conflict among Employed Women in Goa. Dr. Joslyn Henriques Ms. Nikita Goswami Ms. Purnima Mishra	16-23
	A Study on Mental Health of Elderly in Goa Dr. Mukta Karamadi Aafreen Khan Dimple Raju	24-31
5	Body Image and Mental Health among Obese Adolescents Dr. Vijay Viegas	32-38
6	Influence of Lifestyle Patterns on the Mental Health of Adolescents Dr. Freda Cota Pereira	39-44
7	Meaning Making & Post Traumatic Growth: A Case Study Approach Gayle Noronha Dr. Brian Pacheco	45-53
8	Fears Experienced and Self Esteem Among College Students Dr. Mahesh Pai Ms. Dominga Pereira	54-61
9	Retirement and well-being of the Elderly - A Literature Review Smt. Nirmala B. Baliga Dr. S. G. Jadhav	62-68

7. Meaning Making & Post Traumatic Growth: A Case Study Approach

Gayle Noronha

Student, M.A. Wellness Counselling Department, Nirmala Institute of Education, Altinho-Panjim, Goa.

Dr. Brian Pacheco

Assistant Professor, Nirmala Institute of Education, Altinho-Panjim, Goa.

Abstract

The study aimed at obtaining a personalized in depth perspective of individuals' grief and the means they had adopted to make sense of the death of their loved ones. Given that meaning making, like grief is subjective and unique to each individual, the case study method was employed in this study to enable a more in-depth understanding of grief responses in a Goan population. A convenience sample was obtained wherein adult participants who had experienced the death of a family member between 7 to 12 months prior to the interview were approached in person. The study comprised of a mixed sample of bereaved individuals, some grieving the loss of their spouses, and others, their parents and finally one grieving the death of her sibling. Participants were informed of the nature of the study and their written consent was obtained. The participants were personally interviewed and, with their permission, their responses were recorded using a voice recorder application on a phone. Using an unstructured interview style, participants were interviewed about their experience of grief, followed by whether and how they had made sense of the loss and if they perceived any changes, growth or learning based on the experience. The meaning making themes that cropped up in the study are as follows:- Spiritual/religious beliefs, belief in an afterlife, continuing bonds, acceptance, new roles and responsibilities, God's will, gone for a higher purpose, no sense, end of suffering and lived to a ripe old age. The study also revealed the individual and unique ways that the subjects had made meaning, most with a combination of two or more of the above mentioned themes. The results of this study hold the potential for further research in the field of meaning making and post traumatic growth in Goan society.

Keywords: Bereavement, Meaning making, post traumatic growth, meaning making themes.

Optimism Redefined - Bringing Positivity into Your Life provides motivation and encouragement to look at life with a positive attitude. It inspires to have big dreams and work towards realizing those dreams with absolute self-belief and optimism. The purpose of this book is to make a positive difference in your life and help you realize your potential. Your self-belief will help you soar high up in the sky of limitless opportunities. Believe in yourself and have faith in The Almighty.

Subodh S. Haldankar is an Indian writer, speaker, trainer and teacher-educator. He has an experience of over seventeen years in various industries which include customer service, insurance, real estate, sales and marketing, media, and education.

OPTIMISM REDEFINED

Bringing
Positivity into
Your Life

**SUBODH S.
HALDANKAR**

Price Rs 180.00
ISBN 978-1-64869-591-6



Xpress Publishing
An imprint of Nation Press

Subodh

Dr. (Miss) Della Antao
Offg. Principal
Nirmala Institute of Education
Altinho, Panaji, Goa



Goa College of Music

(National Seminar on Research in Music)

“Research in Music”

Proceedings of National Conference
held at Multipurpose Hall,
Sanskriti Bhavan, Patto, Panaji - Goa
on 18th February 2020

**-: Edited by:-
Dr. Shilpa Parab**

Shilpa
Dr. (Mrs) Shilpa Parab
City Director
Nirbhaya Institute of Education
A.12/10/1, Panaji, Goa

CONTENTS

Sr.no	NAMES	TITLES OF THE RESEARCH PAPERS
1.	Dr. Gauri Bhat	"कुछ प्रचलित राग स्वरूप एवं सौंदर्यात्मक मूल्य".
2.	Shri. Prakash Desai	"विविध प्रकारची वाद्ये व त्याचे रस".
3.	Mrs. Anagha Saish Deshpande	"अण्णासाहेब किलोस्करांचे सं. सौभद्र विविध संगीत परंपरांचा अंतर्भाव".
4.	Shri. Saish Deshpande	Concept of Music in the Natyashastra.
5.	Mrs. Teja Dhawlikar	"सोशल मीडिया आणि आधुनिक तंत्रज्ञानयुक्त साधनांच्या युगातील हिंदुस्तानी शास्त्रीय संगीताचे अध्यापन आणि अध्ययन".
6.	Shri. Prasad Gawas	"हार्मोनियम वाद्याचा इतिहास व साधसंगत आणि एकलवादनात निर्माण केलेले स्वतःचे स्थान.
7.	Ms. Sanjana Kaushik	Areas of Research in Khayal Aesthetics.
8.	Dr. Uday Kulkarni	The Significance of Peshkar.
9.	Shri. Shivakumar M.	Rejuvenation of Dhruvapad in Hindustani Music.
10.	Dr. Shashank Maktedar	"घरंदाज गायकीचा पं गजाननबुवा जोशी आणि पं उल्हास कशालकर यांनी केलेला पुर्नवीचार".
11.	Shri. Shivram N. Mopkar	"स्वतंत्र तबला वादन रचनांतील स्थिती व गति".
12.	Mrs. Sapna Naik	A dancers approach in rendering social and Philosophical ideology of kirtan through Bharatnatyam.
13.	Dr. Shilpa Parab	The concept of "Guru" in the present scenario of Hindustani classical Music.
14.	Shri. Dundayya Pujer	Laya in Indian Culture.
15.	Dr. Deeptha Rubasundaram	Research in Music of Bharatnatyam.
16.	Shri. Nitesh Sawant	"गोमंतकीय पारंपारिक भजनी कलेचा वारसा".
17.	Ms. Priti Varang	"आधुनिक शिक्षण पद्धतीत परंपरागत संगीताचे स्थान आणि कलाकार निर्मिती".
18.	Mrs. Prajakta Vengurlekar	"गोमंतकात शास्त्रीय संगीताची वाटचाल".


 Dr. (Miss) Della Antao
 Offg. Principal
 Nirmala Institute of Education
 Alinda, Pooji, Goa

अण्णासाहेब किल्लोस्करांचे सं.सौभद्र : विविध संगीत परंपरांचा अंतर्भाव

सौ. अनघा साईश देशपांडे.

सहाय्यक प्राध्यापक - प्रायोगिक कला,
निर्मला इन्सटिट्यूट ऑफ एज्युकेशन,
अल्तीन्हो, पणजी - गोवा.
फोन ९६५७६१०९०२

email : anagha.abhivyakteegmail.com

सारांश :

मराठी रंगभूमीचा विचार करता, १८४३ साली विष्णुदास भावे यांनी सादर केलेल्या 'सीता स्वयंवर' या नाटकाला आपण पहिलं मराठी नाटक असं मानतो. कर्नाटकातील भागवतमेळा या संघाचा यक्षगानाचा खेळ पाहून भावेंनी प्रेरणा घेतली. त्यानंतर येणाऱ्या मराठी नाटकांची प्रेरणा भावेंचं 'सीता स्वयंवर' ही होतीच. भावे युगानंतर गाजलेले मराठी नाटककार म्हणजे अण्णासाहेब किल्लोस्कर. अण्णासाहेबांच्या ई.स.१८८२ सालच्या संगीत सौभद्र नाटकाने इतिहास रचला. त्यातील सदाबहार संगीताने रसिकमनांवर अगदी आजतागायत मोहिनी गाजवलेली आहे. सव्वाशे वर्षांहूनही जास्तकाळ प्रसिद्धीत राहणाऱ्या या नाटकाच्या संगीताची पाळेमुळे अभ्यासली तर ती कीर्तन, लोकगायन, तत्कालीन रसिकमान्य गीतांच्या चाली आणि शास्त्रीय बाज अशी चौफेर पसरलेली दिसतात.

सूचनक शब्द :

- | | |
|-----------|----------|
| १. मराठी | २. संगीत |
| ३. सौभद्र | ४. नाटक |

अण्णासाहेब किल्लोस्कर

१. प्रस्तावना : गीतं वाद्यं तथा नृत्यं त्रयं संगीतमुच्यते !' अशी संगीताची व्याख्या संगीतरत्नाकर (१३ वे शतक) या ग्रंथामध्ये केलेली आढळते. ही व्याख्या उमजून घ्यायची असेल तर आपल्याला 'नाटक' या प्रकारच्या मुळाशी, अगदी उगमाशी जावून तपासावे लागेल. समाजात आज अस्तित्वात असलेल्या 'नाटक' या प्रकारचे स्वरूप हे त्या त्या समाजातील विधिनाट्यापासून प्रवास करीत इथवर आलेले दिसते. जगभरातील सर्व विधिनाट्यांमध्ये थोड्याफार फरकाने गीत, वाद्य आणि नृत्य यांचा समावेश आढळतोच. विधिनाट्य ते नाट्यविधी आणि त्यापुढे नाट्यात्मविधी अशा प्रवासानंतर आपल्याला सापडतात ती पारंपारिक नाटके, ज्यामध्ये मुळ विधिनाट्याचे बीजघटक दिसून येतात. कळसूत्री बाहुल्यांच्या खेळापासून सुरु झालेला मराठी रंगभूमीचा प्रवाह संगीत नाटक परंपरेकडे येवून स्थिरावतो. या परंपरेमध्येही आपल्याला गीत, संगीत, नृत्यमय हालचाली आणि प्रारंभ गीत (नांदी) अंतिम प्रार्थना (भरतवाक्य) तसाच सूत्रधार हे विधिनाट्याचे बीजघटक आढळून येतात.

२. पहिले मराठी नाटक : १८४२ साली सांगलीचे राजे पटवर्धन यांनी कर्नाटकातील करकी या गावातील भागवतमेळा नावाच्या नाट्यसंघाने केलेले याक्षगानाचे खेळ पाहिले आणि तत्कालीन तमाशा या करमणूक प्रकारापेक्षा हा

Effect on Soccer Trapping, Dribbling and Passing Skills When Training With Futsal and Soccer Balls

MR. CLIFTON M. FERNANDES

(Nirmala Institute of Education Panaji Goa)

MR. SHALIESH CHODANKAR

(Vidya Prabodhini College of Commerce,
Education, Computer and Management)

ABSTRACT

This study deals with motor skill development and factors affecting it. For this purpose the effect of futsal ball on soccer dribbling, passing and trapping skill was seen. For this purpose two group control design was used. Thirty boys from MSB educational institute Pune were selected using non probable convenience sampling method (Best and Kahn, 2008). Ann stehouwer soccer skills assessment was conducted pre and post intervention went on for 3 days a week for 6 weeks. Intervention included soccer lessons for developing trapping dribbling and passing. Descriptive analysis showed a mean of 34.7(± 2.12) and 35 (± 2.26) of pre-test for experimental and control group respectively. Mean of 42.2 (± 3.189) and 38 (± 2.529) of post-test for Ann Stehouwer soccer skills assessment of experimental and control group respectively. To determine the statistical significance independent sample t test was used. A significance difference was found as the t value was 4.007 for Ann Stehouwer soccer skills assessment at 95% confidence level. Hence it can be concluded that using futsal ball when training led to significant improvement of soccer dribbling, trapping and passing of intermediate level players aged 8 to 10.

Keywords: soccer skills, futsal ball, modified equipment, Ann stehouwer soccer skills assessment etc.

INTRODUCTION

Soccer is one of the most popular game in the world governed by FIFA and 209 countries affiliated to it (<http://www.fifa.com/aboutfifa/organisation/associations.html>). Soccer requires a combination of skills and techniques. The game is unique because primarily only feet are used to play the game. This requires far more skill and co-ordination than other sports where hands are used. The important thing about soccer is that being team game that would inculcate in young players the importance of playing as a single unit and playing hard. The second thing that soccer has brought to attention is physical fitness and agility since healthy body is must in today's age (Saha , 2012). Therefore more and more people are turning to soccer as it is easily accessible, fun as well beneficial.

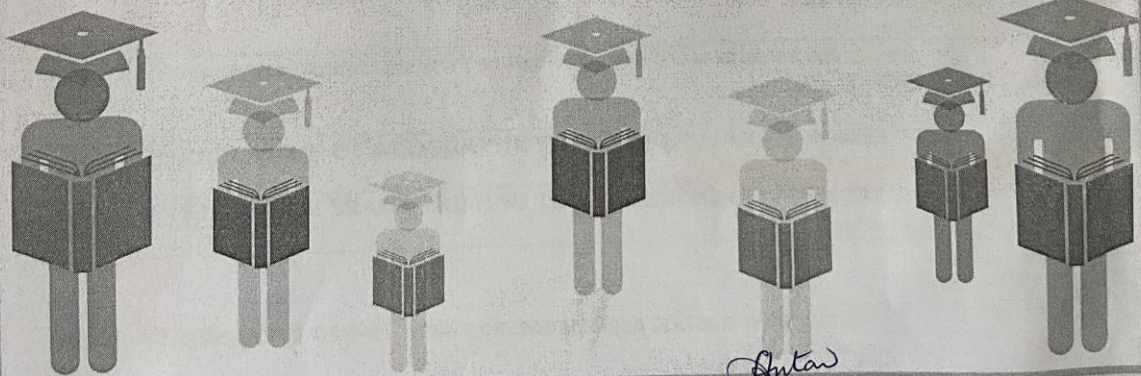
In India there is no system in place to identify and train children at tender age. There is no infrastructure in place for soccer (Saha , 2012). Whereas Europe soccer clubs have got nurseries for nurturing talent top European clubs like FC BARCELONA in Spain AJAX AMESTRADAN in Netherlands an many more have their own academies which nurture talent (<http://www.fcbarcelona.com/club/facilites-and-services/masia>). The training methods practiced in India are old and non-scientific this needs to improve in order to improve overall performance of soccer in the country. Rink, (1985) States that „the general sports skill age occurring between the ages 7 to 10 is period of applying fundamental movement pattern in more complex and specific form“. So many researchers over a period of time have conducted research to improve training methods



GVM's DR. DADA VAIDYA COLLEGE OF EDUCATION

NATIONAL CONFERENCE
TRANSFORMING EDUCATION for the
21ST CENTURY: PROBLEMS & CONCERNS
SEMINAR COMPENDIUM

13TH MARCH 2020



Antao
Dr. (Miss) Delia Antao
Offg. Principal
Nirmala Institute of Education
Altinho, Panaji, Goa

17	Education for Life: Instilling Values	Jyoti Lewis
18	ENVIRONMENTAL EDUCATION AND WOMEN PARTICIPATION IN THE ECOLOGICAL SUSTAINABILITY	Dr. Lt Somya Sharma
19	A STUDY ON INNOVATIVE EDUCATION AND RECENT TRENDS IN INNOVATIVE TEACHING LEARNING PRACTICES IN CLASS ROOM.	Divya Nandakumar, Smitha John
20	Role of ICT in Education	Gowthami Pushparaj
21	Role of Assessment for Learning in the Secondary Schools	Mrs Shylaja Sherief
22	Applying Gandhian Ideas in the Curriculum of Secondary Education	Mr. Rupesh Kharat
23	Humanities Education – the Key to Transformation	Dr. Lucy James
24	SUSTAINABLE EDUCATION A PATHWAY TOWARDS SUSTAINABLE ECONOMIC DEVELOPMENT: A THEORITICAL PERSPECTIVE	Manasi P. Bakhale, Lalita S. Betgar
25	Teaching Grammar using Communicative Methodology with Focus on Form	Akshata Samant
26	Influence of Social media on students of Vivekananda vidyalaya, Bori in Learning Science Projects	Chittaranjandas V. Devulkar
27	Emoji an Emerging Language: A 21 st Century Educational Dilemma or Solution?	Carlos Luis
28	Student Teachers perception towards Effectiveness of teaching environmental education through ICT	Ms. Deeksha S. Naik Talaulikar
29	Perspectives of student teachers on implementing Value oriented education	Ms. Deeksha S. Naik Talaulikar
30	CORRELATION OF GEOGRAPHY WITH OTHER SCHOOL SUBJECTS:	MS MARIA EUTEMIA INES FERNANDES
31	E – LEARNING: TRANSFORMING THE EDUCATION SYSTEM IN INDIA	Saeesh Verenkar, Aditi Silveira

32	Positive Psychology: A wheel of change <i>Aditi Silveira, Saeesh Verenkar</i>
33	Looking at Education from a Modern Perspective: a Case Study <i>Jagruti Sanjay Patkar</i>
34	DIVERSITY, INCLUSION AND EQUITY- The way forward for effective education <i>Lt. Patrick Rajkumar</i>
35	Need For Implementing 'Ancient' Type of Value Education among Present Students <i>Miss Siddhi Chandrakant Sangle</i>
36	DEVELOPING INTERVENTION TECHNIQUES TO ENCOURAGE GOOD MANNERISMS AMONGST MIDDLE SCHOOL STUDENTS <i>Ninoschka H. Pinto, Akshada A. Godinho and Savia M. M. deSousa</i>
37	GANDHI and NAI TALIM in the 21ST CENTURY <i>Mrs Sharmila V. Kerkar</i>
38	Inclusion Of Community Based Activities In Secondary Teacher Education Curriculum For Sustainable Development <i>Susmita Mondal¹ and Jugantar Mishra¹</i>
39	Evidence Based Instruction : An Effective Method for Teaching High School Math <i>Gazal Aga</i>
40	A STUDY ON IMPACT OF E-LEARNING AMONG COLLEGE STUDENTS WITH SPECIAL REFERENCE TO ERNAKULAM DISTRICT <i>Neenu Varghese, Anju Baby</i>
41	युवा आत्म-सबलीकरण आणि भारत श्री. संजय गोवेकर
42	Cyberphobia And Digital Immigrants: A 20th Century Teacher In 21st Century ICT Classroom <i>Samir Naik</i>
43	कोंकणी भाशा अध्यापन पद्दती- एक अभ्यास <i>श्री. दर्शन शंकर कांदोळकर</i>
44	Rediscovering the importance of silent introspection in education through various intervention techniques <i>Akshada Andre Godinho</i>
45	Reflections on the use of Collaborative Learning Strategies within a Literature Classroom

		<i>Delilah D. Pacheco</i>
46	ADDRESSING YOUTH UNEMPLOYMENT THROUGH ENTREPRENEURSHIP SCHEMES IN INDIA.	<i>Ms. Gladys D' Souza</i>
47	Value Education for Students in Digital World with Special Reference to Higher Education.	<i>Sangeeta R. Kadam,</i>
48	Towards a comprehensive integration of new Learning Techniques.	<i>Siddhi S Raut, Siddesh S. Raut</i>
49	Development of Intervention Programme for Improving Reading Skill amongst Middle School Students	<i>Savia M. M. de Sousa</i>
50	ENVIRONMENT EDUCATIONAL PRACTICES IMPLEMENTED BY THE EDUCATIONAL INSTITUTION IN INDIA: AN APPROACH TO SUSTAINABLE DEVELOPMENT GOALS IN INDIA	<i>Swapna B S , Mithra Rivin</i>
51	DEVELOPMENT OF AN INTERVENTION PROGRAMME TO IMPROVE LISTENING SKILLS	<i>Ninoschka H. Pinto</i>
52	Health and Physical fitness Issues that worries in the 21 st Century : In context to the Indian Society	<i>Surekha Patil</i>
53	EFFECTIVENESS OF VARIOUS EDUCATIONAL STRATEGIES IN PROMOTING ENVIRONMENTAL EDUCATION	<i>Richa S. Chimulkar</i>
54	STATUS OF VOCATIONAL AND SKILL BASED EDUCATION IN INDIA: ISSUES AND CHALLENGES	<i>Pratiksha A Kudalkar</i>
55	A journey to the world of new Learning Techniques.	<i>Siddhesh S Raut</i>
56	Craft centered Education to foster employment opportunities in Goa	<i>Lalita S. Betgar</i>
57	Balancing Education in the 21 st Century.	<i>Lucius De Almeida</i>
58	Making Science Inclusive: - A Way towards Inclusion	<i>Manasi Bakhale</i>

Role of Assessment for Learning in the Secondary Schools

By Mrs Shylaja Sherief

Assistant Professor, Nirmala Institute of Education, Altinho, Panaji, Goa
Email: Shylajagvm@gmail.com

Introduction:

Secondary education plays a very important role in the life of a child as his/her future depends a lot on the type of education he/she receives at the secondary level. Apart from strengthening the roots of education of a child, secondary education can be instrumental in shaping and directing a child to a bright future. Assessment is a key element in the process of educational change and improvement. If it's done well, it can signify what the students want to know and be able to do and can help educators create the learning environments that support the attainment of the instructional objectives.

Assessment for Learning in Education: Review of Literature

Assessment in education is the product of the 20th Century and it has been defined differently by various researchers. Derek Rowntree states that "if we wish to discover the truth about an educational system, we must first look in to its assessment procedures" (Rowntree, 1987, p.1). William and Thompson (2008), Scriven (1967) and Bloom (1969) proposed the terminology "formative" and "summative" assessment, given the reason to differentiate the role of evaluation. Formative assessment is introduced as an ongoing process of evaluating students' learning, providing feedback to adjust instruction in learning and improving the curriculum. Summative assessment are administrative decisions and able to assign grades to the tests. It may be formative in helping the teacher to identify areas where more explanation or practice is needed. But for the pupils, the marks or remarks on their work may tell them about their success or failure but not about how to make progress (Broadfoot et al; 1999). Assessment significantly affects students approach to learning. Assessment paradigms have shifted from "testing learning of students to assessing for students learning" (Birenbaum and Feidman, 1998). The term 'Assessment for learning' was more preferred and defined as "the process of seeking and interpreting evidence for use by learners and their teachers to decide where the learners are in their learning, where they need to go and how to get there" (Broadfoot et al: 2002). As educators actively involved in evaluation practices, we must agree to the fact that assessment has an important influence on student's learning. Student's learning is closely related to the student's approach to the way they learn and express. The way in which a student thinks about learning and studying, determines the way in which he tackles the given assessment tasks. The learner's experience of evaluation and assessment determines the way in which the student approaches his future learning. Assessment for learning has many generic features but there are some features which can be used for science teaching and learning. Education need to create a good learning type of environment to achieve good learning outcomes one of which is scientific literacy. The importance of expressing ideas about science through questioning and discussion is evident in much of the literature and to find out pupil's misconception which is considered as a valuable Assessment for Learning (AFL) benefit. Researcher like (e.g. Keogh. and Naylor 1998, 2007) shows that children have a wide range of ideas about a variety of science topics and some of these ideas are incorrect and perhaps more important, it can be very difficult to encourage students to adopt the correct

the society. Value based education helps in development of the child in his character, physique, and mentality. The aim of choosing student teachers in the study was to know their perspectives related to provide value-based education to the students in the society. Teacher trainers are the future trainers who would help in shaping the future of the society, hence they play a very important role in inculcating good values among the students. In this 21st century it is very important that each and every child should be provided with the qualitative value-based education in the society. With the rising quantity of the population the quality of each and every individual is deteriorating which leads to increase in crime rates, violence rise, discrimination rates in the society. Hence value- based education plays a very important role in shaping the life of each and every individual.

Bibliography

Borah, A. K. (July 2014). A comparative study on Need for Value Based Education an Opinion Survey among School Teachers Achyut Krishna Borah . International Journal of Humanities & Social Science Studies (IJHSSS) .

Iyer, D. R. (Jan. – Feb. 2013). Value-Based Education: Professional Development vital towards effective integration . IOSR Journal of Research & Method in Education, 17-20 .

Patil, Y. (2013, February). Role of Value-Based Education In Society. Retrieved from www.researchgate.net: https://www.researchgate.net/publication/286933664_Role_of_Value-Based_Education_In_Society

SINGH, P. (n.d.). IMPACT OF VALUE BASED EDUCATION ON HOLISTIC PERSONALITY DEVELOPMENT AND MANAGEMENT OF ACADEMIC STRESS IN HIGHER . Retrieved from shodhgangotri.inflibnet.ac.in: <https://shodhgangotri.inflibnet.ac.in/bitstream/123456789/2531/1/synopsis.pdf>

**CORRELATION OF GEOGRAPHY WITH OTHER SCHOOL SUBJECTS:
(PAPER PRESENTED BY ASSISTANT PROFESSOR, N.I.E., MS MARIA EUTEMIA
INES FERNANDES).**

INTRODUCTION:

At one time geography was supposed to serve other subjects like a faithful maidservant. Later on, it was included in the syllabus and thus gradually earned an important place for itself in the school curriculum.

Today Geography is a link between the physical sciences on the one hand and the social sciences on the other. Consequently, as it stands midway between the two, it is considered to be a liaison subject. A large part of Geography is natural science and the remaining part is social science and the two are closely interrelated. Because of its relationship with the social and natural sciences, it generally appeals to a scientist and to a student of social sciences. The geography teacher should bring home to the pupils the inter-relationship between the two. Geography can be correlated to other school subjects like History, science, math and language.

Now let us see how Geography is co-related to History:

- ✓ Geography and History: Geography and History are most intimately related. In fact, they are twins, one stresses time and the other space. History studies people of different times and Geography studies people of different places.
- ✓ Therefore, historical facts can serve as a good basis for arousing interest in geographical studies. The two subjects are now studied separately for convenience, but we cannot separate the two subjects.
- ✓ Geography is the stage on which the drama of history is enacted

Upon further analysing the sub-categories of the positive behaviours observed, (graph 3), it was observed that there was an overall improvement in all the categories which included Attention, Organisation, Work Habit, Conflict Resolution and Interaction with Peers

Upon further analysing the sub-categories of the negative behaviours observed, (graph 4), it was observed that there was no overall improvement in the categories which included Classroom Behaviour, Organisation and Conflict Resolution.

DISCUSSION AND CONCLUSION

The questionnaire used in this study, was designed to cover generic positive behaviours that we would like to improve in the students as well as a few negative behaviour that we endeavoured to control in students. Positive behaviours that were focused upon were categorized under

1. Attention
2. Organisation
3. Work Habit
4. Conflict Resolution
5. Interaction with Peers

Negative behaviours that were focused upon were categorized under

1. Classroom Behaviour
2. Organisation
3. Conflict Resolution

A five point rubric scale was used ranging from 0-4,

Always: 4 Frequently: 3 Sometimes: 2 Rarely: 1 Never: 0

Students were evaluated on their behaviour in each category and overall, before and after the intervention programme.

In conclusion, this study successfully proved that encouraging positive behaviours like politeness, completing homework and books on time and helping others in a classroom can result in a noticeable improvement among the students' mannerisms. On the other hand, controlling or reducing negative behaviour patterns like the use of foul language, interrupting the teacher etc... proved to be a harder task.

On the whole, the designed intervention technique was successfully implemented and showed good results. Yet, there is always room for improvement. The future scope for such research is as vast as it is vital. A well mannered society leads to a well organised and happy society.

BIBLIOGRAPHY

<https://www.aresearchguide.com/4format.html>

S. Houghton, Wendall and F. Merret, "Classroom behaviour problems which secondary school teachers say they find most troublesome" *Journal of British Research*, vol. 14, no. 3. Pp. 297-312, 1988.

C. Ho and J. Leung, "Disruptive classroom behaviours of secondary and primary school students," *Journal of Educational Research*, vol 17, no. 2, pp. 219-233, 2002

Rachel C. F. Sun and Daniel T. L. Shek, "Student Classroom Misbehaviour: An Exploratory study based on Teachers' perceptions", *The scientific World Journal*, vol 2012, Article ID 208907, 8 pages, 2012

Joan Luddy, "Students learn to Respect Thanks to Good Manners" *Education World* – Blog

GANDHI and NAI TALIM in the 21st CENTURY

Mrs Sharmila V. Kerkar
Assistant Professor

Nirmala Institute of Education
Altinho, Panaji – Goa.

INTRODUCTION

Mohandas Karamchand Gandhi who is popularly called as Mahatma Gandhi was a great man. Almost all the great leaders of the world gave and still gives him due respect. Albert Einstein once expressed that 'generations to come people will not believe that a man with flesh and blood like Gandhi ever walked on this earth.' (Dash, 1990). Barrack Obama Ex, USA President expressed his wish to have dinner with Mahatma Gandhi. Martin Luther, the King stated that Gandhi showed him the way to fight with the White not to hate him. It was the Gandhi who made Ashramas to be the epic centres of India's freedom struggle which was just against the Hindu ideology of Ahsramas which believes that they are meant to rest after the retirement.

Mohandas Gandhi was really a unique personality who understood the people of India very well. He was a great communicator who has according to me he is the first women liberator in India. He believed that to be spiritual there is no need to go to the mountains; service to the humanity will serve the purpose. For him 'Truth was God and God was Truth. 'But here one should remember that God is not the person but it is a Principle. Gandhi has tried to give solution to every problem that prevails in our society today. It may be the political problem, social problem, economic problem, environmental problem or the educational problem. But we the Indians have not given the serious thought to his ideas and the principles. Teachings of Mahatma have been forgotten in his own country and by his own people. With this regard I would like to give the translation of first four lines of a poem written by late Shri Vishnu Surya wagh which meant that 'politicians simply come to pay homage to Gandhi on his death and birth anniversary on Rajghat, they do not know the meaning of Ghandhi-ism and it is because of the film called Lage Raho Munnabhai have taught them the true meaning of Ghandi's principles. In Marathi language it goes like this....

Education system of the country should be revised from time to time as per the emerging needs of the society. Today India is trying to strive for 'Make in India', Digital India 'or 'Life skill Education' and 'Lifelong Education. 'All this can be achieved through the system of education which was suggested by Gandhi in 1937 at Wardha conference.

Ghandhi have given his educational ideas through Basic Education Scheme which is also called as the Wardha Scheme of Education or Nai Talim or Buniyadi Shiksha. Through there is a little difference between the Basic education and Nai Talim which may be made clear in the latter half of the write up.

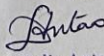
Brief Life Sketch of Gandhi

He was born on 2nd October 1869 at Porbandar, Kathiawar in Gujarat. At the age of 14 he was married to Kasturba. He passed his Matriculation examination in 1887 and went to England for studying Law. In 1891 he passed his Law examination from England. Then he went to South Africa for attending the Legal matter of a rich Indian Firm. It was here he evolved the ideals of 'Truth and Non- Violence.' Being Indian he was thrown out from first class compartment. He has bitter experience of racial discrimination. On his return to India he took leading part in the freedom struggle movement. He believed in simple, well disciplined life. He spent his life in the upliftment of the sick and the poor. He established 'Sabarmati Ashram and Sevagram which acted as centres for most of his educational and political activities too. His ideals are reflected in his books "Hind Swaraj" and "My Experiments With Truth." It is really great irony that Gandhi, the apostle of Truth and Non-Violence was shot on 30th January, 1948 by Nathuram Godse.

Gandhi's Philosophy of Life

139

ISBN: 978-93-5406-616-0 GVM'S DR. DADA VAIDYA COLLEGE OF EDUCATION


Dr. (Miss) Delia Antao
Offg. Principal
Nirmala Institute of Education
Altinho, Panaji, Goa

Sangeeta R. Kadam,

Assistant Professor,

Nirmala Institute of Education, Panaji Goa.

sangeeta3010@yahoo.com

Contact No. 9822161501/9588424628

Introduction:

Higher education Institutions have a major role to play in preparing the younger generation for promising future. Apart from imparting quality education, they need to instil ethical, moral and social values amongst the student fraternity. Values are the auto-regulators of human behaviour. One's vision remains restricted to oneself only without value education. It is the value education which develops the competence of recognising the universality of human aims and aspirations. Values give a person his individuality and character. It acts as a guiding force and tells us what we should and should not do. Schwartz (1992, 1994). Schwartz (1992) defines a value as: "a desirable trans situational goal varying in importance, which serves as a guiding principle in the life of a person or other social entity" (p. 21). Value Education is a pathway to global paradise. In order to achieve sustainable development value education is essential. Tagore, Mahatma Gandhi, Sri Aurobindo, Dr. S. Radhakrishnan and all other thinkers and educationists laid special emphasis upon the development of spiritual aspects and values through education. Each and every person of the society should be conscious about accountability to himself or herself, to the parents and family, to his or her neighbours, to the society, and more over to the God. A close analysis of education reveals that good education is inseparable from value oriented education which should promote a spirit of service, social sensitiveness, cooperation, sacrifice and high moral character. There is an old saying that "values are to be caught and not to be taught." If there is a value based ideal and moral society it may be correct. The growing generation will get ample situation to see and practice a moral life. They can catch values of elderly people and either by imitation or by special efforts they can develop appropriate values accepted and respected in the society. But it is not the present condition. So values have to be taught as well as caught.

Present Scenario:

In these days and age, newspapers are teeming with alarming news akin to "Mother killed her children", "Girl Gang-raped", "women killed for Dowry" and so on, exposing the mind-set of the society (Kaur, Sukhjeet. and Saini, S.K. 2006). Various barbaric qualities and other destructive forces give clear indication of the process of degeneration of human society. True to say that communication is the key factor in inculcating values. There is a need to understand the attitudes, emotions, feelings and motives of students. No doubt, values can be transmitted through action, yet communication seems to be the most important. The youth of today seem to have lost all decent moral, social and ethical values. There is a mad pursuit for accumulating wealth and power and acquiring superior status in society even at the cost of humanity in us. We have entered in a century full of crisis-particularly crisis in character, credibility, competency and value based competency. There should be equilibrium between knowledge and skills that science and machinery bring with the values and insights of ethics. The loss of moral and ethical values among students is leading to conflicts in the globe. The moral and ethical values that make us honest individuals can be inculcated only by value-based education. Knowledge Based Education can only be transferred to our younger generations but Value Based Education (VBE) can transform them (Raju Narayana Swamy, 2010). It is more awakening and informing. For life-oriented education, we need to create a special environment in institutions to transform our students.

ISSN 2277 - 5730
AN INTERNATIONAL MULTIDISCIPLINARY
QUARTERLY RESEARCH JOURNAL

AJANTA

Volume - IX

Issue - I

January - March - 2020

ENGLISH PART - I

Peer Reviewed Referred
and UGC Listed Journal

Journal No. 40776



ज्ञान-विज्ञान विमुक्तये

IMPACT FACTOR / INDEXING

2019 - 6.399

www.sjifactor.com

❖ EDITOR ❖

Asst. Prof. Vinay Shankarrao Hatole

M.Sc (Maths), M.B.A. (Mktg.), M.B.A. (H.R.),
M.Drama (Acting), M.Drama (Prod. & Dir.), M.Ed.

❖ PUBLISHED BY ❖



Ajanta Prakashan

Aurangabad. (M.S.)

Dr. (Miss) Delia Antao
Offg. Principal
Nirmala Institute of Education

❧ CONTENTS OF ENGLISH PART - I ❧

S.No.	Title & Author	Page No.
1	A Thematic Study of Philip Larkin's "High Windows" Ajay Vitthalrao Chandore	1-6
2	Impact of Globalisation on Performance Text Anagha Deshpande	7-11
3	The Impact of Make in India Scheme on Entrepreneurship Prof. Tayade Asmita Pravin	12-17
4	Entrepreneurship and Make in India Dr. Barhate Gorakh Haribhau	18-22
5	Impact on Entrepreneurship Training and Development Activity Conducted by MSMEs in Maharashtra Dr. Bharti Sudarshan Goswami	23-28
6	Post Colonialism and Indian Fiction in English - Some Observations Dr. Bipinchandra N. Shinde	29-32
7	Impact of Innovation on Business Sustainability & Entrepreneurship Mr. Devidas Muke	33-40
8	Mahesh Dattani: A Playwright of World Stature Dipak Shivaji Jamdhade	41-46
9	Globalization and Education : Challenges and Opportunities Dr. Dipal Rameshbhai Dave	47-53
10	Globalization and its Impact on Agriculture Sector in India Dr. Gangadhr Ramrao Bhuktar	54-59
11	Concept of 'Homeland' in Salman Rushdie's Imaginary Homeland Jay Ganpat Chavhan	60-63
12	Impact of Globalization on Agricultural Sector Export of India Asst. Prof. Mamta Gokuldas Hatkar	64-69
13	A Trajectory of Indian English Literature (IEL) : Through the Lens of Globalisation Ms. Millie Adeline Pereira	70-75

2. Impact of Globalisation on Performance Text

Anagha Deshpande

Asst. Professor, Performing Arts, Nirmala Institute of Education, Panaji- Goa.

Abstract

The traditional concept of acting deals with an actor's action and its subsequent reaction performed in front of the audience. The actor communicates the script and the concept of the playwright. This communication format has undergone quiet a transformation since the classical eras to the modern multimedia genre of play production.

Playwright and his word were of utmost importance during the classical period of Greek theatre and the Indian Sanskrit theatre. The writer himself used to be the director of the play then. This outlook has changed in the last 2000 odd years and more so during the last century. Social stratification of the modern times has demanded a more comprehensive script which have given rise to various theories for the actors to adapt the writer's word into action and then into his performance.

Keywords: Drama, Acting, Stage, Globalisation, Playwright, Script

Introduction

The methodology of acting has been interpreted and explained by various civilisations and by thinkers like Aristotle in his *Poetics* (Greece) and elaborately by sage Bharata in his treatise, *Natyashastra* (India).

More lately, other theatre practitioners developed their own theories of which some were for the proscenium while others defied the pictorial frame itself. Of these, some of the global writer/directors who have made a mark on the school of acting while inspiring different branch of the performance text for the 20th century are,

- (a) Konstantin Stanislavski, *Moscow* (method of physical action),
- (b) Vsevolod Meyerhold, *Moscow* (the principle of biomechanics with symbolism),
- (c) Bertolt Brecht, *Germany* (de-familiarising or distancing effect)
- (d) Antonin Artaud, *France* (expressionistic approach through theatre of cruelty),
- (e) Jerzy Grotowski, *Poland* (physical expression by disobeying the spoken word) and,
- (f) Sanford Meisner, *New York* (performing instinctively to the surrounding environment)

All of these theories have been practiced and put to use by different directors through their actors and accepted by their audience. Why would an act of a stage performance need so many different theories? Changing times, changing social values and sensibilities led to the propagation of these various theories in acting. These alterations occurred due to the progressions taking place globally in the styles of writing the drama text. These were the result of changing social structure. A changed text demands a novel performing text and so, these methods evolved to convert and transform the writer's script into the 'script of an actor'.

To comprehend this difference, one has to understand the process of acting and play making.

Actor's Performance Text

The formulated manual of instructions is the performance script of each individual actor. In this process, the dramatic text of the playwright reconstructs itself into the performance text for that individual artiste. A drama actor is different from other performers of theatre forms. Jugglers, Stand-up Comedians, Circus Actors, Folk Performers, Singers and Dancers are aware of their audience and their reactions. But an actor is focussed and involved in the character that is being portrayed and lives in that moment. To be in that particular space at that particular moment while being a different person (character), an actor needs to create his own text. Dramatic text by a writer mainly deals with the story, characters of the story, their inner world, their relationships, problems and events. Each writer chooses his structure to communicate and an individual method to narrate the story. This dramatic text mentions very little about the character's gestures, postures, emotional expressions, movements and compositions. Hence an actor needs to use his/her ability to interpret this dramatic text and analyse the development of his/her character. With this understanding he/she has to translate this into an effective performance. To achieve this, an actor needs to create his/her own craft and subtext. This way, the dramatic text is enriched and supported by universal sounds, intonations, physical movements, gestures and expressions. This text of the actor is then supplemented by the director's interpretation and technical support by various designers such as Set, Lights, Costume, Music and Make-up. With everyone's inputs, a dramatic performance takes place. A performance text thus becomes different and enhanced than the original dramatic text. The audience can thus get to experience a variety of versions of the same dramatic text when performed by different groups and actors due to their different interpretations which emerge during the process. Experiencing such various



St. MARTIN'S ENGINEERING COLLEGE

A NON MINORITY COLLEGE AFFILIATED TO JNTUH, APPROVED BY AICTE, ACCREDITED BY NBA & NAAC A+
ISO 9001 2008 CERTIFIED, SIRO RECOGNITION BY MINISTRY OF SCIENCE & TECHNOLOGY, GOVT OF INDIA,
DHULAPALLY, NEAR KOMPALLY SECUNDERABAD 500 100, TELANGANA STATE, INDIA. WWW.SMEC.AC.IN



CERTIFICATE OF APPRECIATION

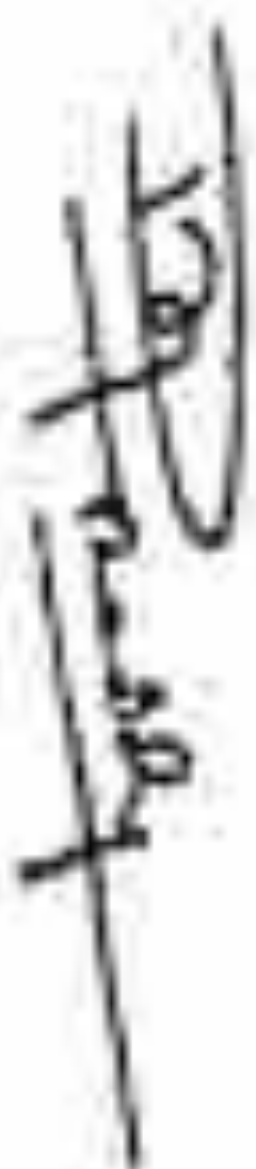
Paper ID : 582



has participated and presented paper on
EFFECTIVENESS OF ADVANCE ORGANIZER MODEL ON READING COMPREHENSION AND
ACHIEVEMENT IN ENGLISH OF STUDENTS OF STANDARD NINE
in the First Online International Conference on
“Continuity, Consistency and Innovation in Applied Sciences and Humanities”
(ACCLASH-2020)

organized by Department of Science and Humanities,
St. Martin's Engineering College, Dhulapally, Secunderabad, T.S, India
on 13th & 14th August 2020.

This is to certify that
Millie Adeline Pereira,
Nirmala Institute of Education, Goa


Dr. Ranadheer Reddy Douthi
Convener & HOD (S & H)




Dr. P. Santosh Kumar Patra
Patron, Program Chair & Principal

